प्रेरणा
RNI No. UPHIN/2000/3766 ISSN No. 2581-3528 ₹ : 20

# केशव संवाद

(जनवरी 2024)

## श्रीरामोत्सव

सबके राम सबमें राम

AYODHYADHAMM

# केशव संवाद

RNI No. UPHIN/2000/3766

ISSN No. 2581-3528

जनवरी, 2024
वर्ष : 24 अंक : 01

**संपादक**
कृपाशंकर

**सह संपादक**
डॉ. प्रदीप कुमार

**कार्यकारी संपादक**
डॉ. नीलम कुमारी

**समन्वयक संपादक**
पल्लवी सिंह

**पृष्ठ संयोजन**
वीरेंद्र पोखरियाल

**संपादकीय कार्यालय**
प्रेरणा शोध संस्थान न्यास
सी-56/20 सेक्टर-62, नोएडा -201301
फोन न. 0120 4565851, 2400335
ईमेल : keshavsamvad@gmail.com
वेबसाइट : www.prernasamvad.in

स्वामी पंकज कुमार की ओर से मुद्रक/प्रकाशक रमन चावला द्वारा चन्द्र प्रभु ऑफसेट प्रिंटिंग वर्क प्रा.लि. नोएडा से मुद्रित तथा केशव भवन 105 आर्यनगर सूरजकुंड रोड मेरठ से प्रकाशित



इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। संपादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निपटारा मेरठ की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों/फोरम में मान्य होगा। संपादक


# विषय सूची


| | |
|---|---|
| जन-जन के आधार हैं राम | -अभिषेक दयाल शर्मा....05 |
| सबके राम | - पल्लवी सिंह.....06 |
| सबके राम, सबमे राम | - प्रो. (डॉ.) हरेन्द्र सिंह.....08 |
| श्री राम मंदिर अयोध्या में ही क्यों | - अनुपमा अग्रवाल.....10 |
| राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा संस्कृति की पुनर्स्थापना | - डॉ. नीरजा शर्मा.....12 |
| मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम | - डॉ. शैलजा शर्मा.....14 |
| साहित्य में लोकनायक श्रीराम | - प्रो. उर्विजा शर्मा.....16 |
| जीवन प्रबंधन के अग्रदूत भगवान श्री राम | - डॉ. नीलम कुमारी....18 |
| राम मन्दिर निर्माण में महिलाओं का योगदान | - श्रीमती सोनम.....22 |
| श्री राम जन्मभूमि और रोजगार | - डॉ. शिवा शर्मा.....24 |
| भारतीय संस्कृति में श्री राम का चरित्र | - डॉ. कामिनी चौहान..26 |
| राम मंदिर से राष्ट्र मंदिर की ओर | - डॉ. मंजरी गुप्ता.....28 |
| वनवासी राम : समरस चेतना के आदिपुरुष: | -डॉ. रामशंकर.....30 |


पाठकगण पत्रिका के बारे में अपने सुझाव एवं प्रतिक्रिया, 'संपादक के नाम पत्र' शीर्षक से ई-मेल (keshavsamvad@gmail.com) के माध्यम से भेज सकते हैं। चुने हुए पत्रों को पत्रिका के अगले अंक में प्रकाशित किया जायेगा।

ISSN No. 2581-3528

## संपादकीय.....

यह उत्सव रामलला का है । कुछ और ललक अब क्या होगी।।
जो धरा छुई हो रामचरण। वह स्वर्ग नहीं तो क्या होगी।।
धरती पर स्वर्ग उमड़ आया। हे राम! आपका स्वागत है।।

श्रीरामोत्सव के लिए अयोध्या नगरी अपनी दिव्यता, भव्यता ओर नव्यता के साथ दुल्हन की तरह सज कर तैयार हो गई है। प्रत्येक भारतवासी बड़ी उत्सुकता से श्री रामलला के गर्भ गृह में पुनः स्थापित होने की प्रतीक्षा कर रहा है। हर घर, आंगन, मंदिर अपने आराध्य प्रभु राम के दर्शन के लिए लालायित हैं। चारों तरफ उत्सव का वातावरण है। ऐसा लगता है कि भारत ही नहीं, बल्कि पूरा ब्रह्मांड ही राममय में हो गया है। श्री राम उत्सव भारत समेत संपूर्ण विश्व का उत्सव बन गया है। यह उत्सव पूरे विश्व में सनातनी परंपरा का हस्ताक्षर होगा।

सभी के आराध्य प्रभु श्री राम को समर्पित केशव संवाद पत्रिका का विशेषांक 'श्रीरामोत्सव सबके राम सबमें राम' आप सभी सुधि पाठकों को सौंपते हुए बड़े ही हर्ष व आत्मगौरव की अनुभूति हो रही है। 500 वर्षों से भी अधिक लंबे संघर्ष के बाद विक्रम संवत 2080 के पौष माह के शुक्ल पक्ष की द्वादशी तिथि (22 जनवरी 2024 ) को अयोध्या में नवनिर्मित भव्य मंदिर में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा होगी जो करोड़ों भारतीयों की त्याग, तपस्या व बलिदान का प्रतिफल है। यह एक ऐसा ऐतिहासिक क्षण है जिसके लिए प्रत्येक भारतवासी प्रतीक्षारत है। कोई मीलों पैदल चलकर रामलला के दर्शन करने आ रहा है, तो कोई मंगल गीत गाकर रामलला का स्वागत कर रहा है, तो कोई उस शुभ घड़ी की प्रतीक्षा कर रहा है जब उसकी आस्था, सम्मान, स्वाभिमान और अस्मिता के प्रतीक रामलला की प्राण प्रतिष्ठा होगी और वह दीप जलाकर दिवाली मनाएंगे। भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी 11 दिन का कठोर व्रत लिया है जो इस बात का प्रमाण है कि राम विराट भारतीय सांस्कृतिक चेतना के आधार स्तंभ हैं। राम का आदर्श भारतीय संस्कृति का ऐसा दिव्य प्रभामंडल है जो संपूर्ण विश्व को आलोकित करता रहेगा। राम भारतीय संस्कृति के प्राण पुरुष ही नहीं, वरन् विश्व संस्कृति के नायक भी हैं। यही कारण है कि राम जन-जन के रोम रोम में समाए हैं और राम से भी अधिक बड़ा राम का नाम है। भारतीय संस्कृति के अभिवादन में राम हैं, दुख में राम हैं, जीवन से लेकर मृत्यु तक बस राम ही राम हैं। जन-जन में राम हैं, कण कण में राम हैं, तेरे भी राम हैं, मेरे भी राम हैं, सबके राम हैं सबमें राम हैं। केवट, शबरी, विभीषण, सुग्रीव के राम हैं। राम चरित्र सभी जाति, धर्म, संप्रदाय,पंथ देश व विश्व के लिए आदर्श एवं अनुकरणीय है।राम मंदिर की पुनर्स्थापना व रामलला की प्राण प्रतिष्ठा उच्चतम मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना है व सांस्कृतिक चेतना का मूर्त रूप है। अयोध्या में राम मंदिर निर्माण बाबरी मस्जिद मानसिकता का पराभव ही नहीं, वरन् संपन्न और सुदृढ़ राष्ट्र का सूर्योदय भी है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के शब्दों में 'राम मंदिर करोड़ों-करोड़ों लोगों की सामूहिक संकल्प शक्ति का प्रतीक बनेगा' इस संकल्प रूपी राम यज्ञ, राष्ट्रीय यज्ञ में सभी भारतीय अपना योगदान दें।रामलला की प्राण प्रतिष्ठा स्वयं पीएम मोदी के कर कमलों द्वारा होगी। उन्होंने भावुक होकर कहा कि 'गर्भ गृह में उस पल हृदय के हर स्पंदन में मेरे साथ 140 करोड़ भारतीय होंगे। उन्होंने आगे कहा कि आप मुझे आशीर्वाद दें, ताकि मेरे मन से, वचन से, कर्म से मेरी तरफ से कोई कमी ना रहे' निसंदेह राम सबके हैं और राम सबमें हैं। राम को समर्पित केशव संवाद पत्रिका के इस अंक में विभिन्न लेखों के माध्यम से राम चरित्र के विभिन्न पहलुओं व सबके राम को आप तक पहुंचाने का प्रयास किया गया है।

रामस्य चरितं श्रुत्वा धारयेयुर्गुणाज्जिनाः, भविष्यति तदा ह्येतत् सर्वं राममयं जगत।।

राम के चरित्र को अपने जीवन में आत्मसात कर उनके आदर्शों का जीवन में अनुसरण करें, तो सभी राममय हो जाएंगे और रामराज्य का सपना साकार होगा। आप सभी से निवेदन है कि 22 जनवरी 2024 रामलला के गर्भ गृह में प्राण प्रतिष्ठा के इस ऐतिहासिक क्षण का साक्षी बनें।

संपादक

# जन-जन के आधार हैं राम

अभिषेक दयाल शर्मा
युवा पत्रकार

**आध्यात्मिक राम -** प्रत्येक जीव के रोम–रोम में राम बसे हैं। जब से गुरु वशिष्ठ ने श्रीविष्णु अवतारी राम को इस नाम से अलंकृत किया तब से यह नाम प्रत्येक जीवात्मा का आधार और बल हो गया। आज भी हमारे प्रत्येक भाव को ही आधार मिलता है। समस्या हो तो 'राम', खुशी हो तो जय–जय राम, दुःख हो तो 'हे राम। जन्म, जीवन और मरण अवस्थाओं का आधार और वास्तविकता राम ही हैं। वर्षों तक इस भूमि पर प्रत्येक प्राणी को जीवन के कर्म तथा धर्मपथ पर अग्रसर करने वाले राम ही हैं। अयोध्या भूमि की पवित्र रज के कण में राम रचे–बसे हैं।

**प्रामाणिक राम -** महार्षि वाल्मीकि रचित रामायण के प्रत्येक खंड में जिन स्थानों का वर्णन किया गया है, वे सहस्रों वर्षों बाद भी जस के तस हैं। अयोध्या नगरी से लेकर श्रीलंका तक सभी स्थानों के आज भी दर्शन किये जा सकते हैं। पावन सरयू से लेकर सेतुबंध रामेश्वर तक, माता शबरी के आश्रम से किष्किंधा नगरी तक सभी प्रामाणिक हैं। छद्ममेष धारी कलियुगी मारीचों ने हरसंभव प्रयास किया कि 'रामसेतु' को 'एड्मस ब्रिज' बताया जाये, परंतु आज तक साबित नहीं कर सके। भारत के बच्चे–बच्चे के मन मंदिर में बसे राम को कोई प्रमाण कब चाहिए था? परंतु रामायण स्वयं सारे वस्तु–स्थानों का प्रमाण दे देता है। रामसेतु की लंबाई, चौड़ाई, गहराई वही

**महार्षि वाल्मीकि रचित रामायण के प्रत्येक खंड में जिन स्थानों का वर्णन किया गया है, वे हजारों वर्षों बाद भी जस के तस हैं। अयोध्या से लेकर श्रीलंका तक सभी स्थानों के आज भी दर्शन किये जा सकते हैं। पावन सरयू से लेकर सेतुबंध रामेश्वर तक, माता शबरी के आश्रम से किष्किंधा नगरी तक सभी प्रामाणिक हैं।**

जो श्रीराम काल के निर्माण के समय थी। महादेव का पवित्र ज्योर्तिलिंग आज भी रामसेतु का रक्षण तथा प्रमाण देते हैं। चैत्र की नवमी तिथि को ग्रहों और नक्षत्रों की दशा आज भी बताते हैं कि वैज्ञानिक दृष्टि से रामजन्म कब और कहां हुआ था।

**विवाद और श्रीराम -** भारत भूमि पर जब आक्रान्ताओं का आक्रमण हुआ और उन्होंने देखा कि यहाँ का दर्शन, वैभव आचरण अद्वितीय है, तो वे सब चकित हो गये। जिन लोगों की तलवार के बल पर धर्म थोपा गया हो, वे कहां समझ सकते थे कि भारत का धर्म और दर्शन कितना महान था। सनातन का जीवन–दर्शन, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष आधारित रहा है। जहां श्री राम मोक्ष, लक्ष्मण जी काम, भरत जी धर्म तथा शत्रुघ्न अर्थ के रूप में हैं। माता जानकी स्वयं शक्ति का रूप तथा पवन पुत्र भक्ति की पराकाष्ठा हैं। जिन सभ्यताओं में पिता की हत्या कर राज्य अधिग्रहण की परंपरा रही हो वे कब राम को समझेंगे? जो अंग्रेज 1919 तक महिलाओं को मनुष्य ही नहीं मानते, वे यह कैसे मानते कि श्रीराम माता की आज्ञापालन हेतु वन चले गये। जहां पति और पत्नी एक समझौते को विवाह मानते हों वे कब सिया का राम के प्रति समर्पण समझ सकते हैं?

जहां भाई–भाई का वध करता है और स्त्री तथा राजभोग को ही प्रधान मानते हों वे कैसे श्रीराम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघन जैसे भाइयों को मान सकते हैं। जहां राजा केवल प्रजा का शोषण करता रहा, वे कैसे राजा–राम के समान राजा की कल्पना भी कर सकते हैं? जहां राज के लिए प्रजा अछूत रहती है वे कैसे सोच सकते हैं कि एक राजा अपनी प्रजा का सेवक बनकर बिना भेदभाव किये न्याय करता है? जहां वीरता केवल शोषण, स्त्रीभोग, हत्या और लूटपाट को ही पुरुषार्थ माना जाता रहा हो वे लोग कैसे मान सकते हैं कि राम स्वयं लंका को जीतने के बाद भी वहां के द्वार पर भी नहीं गये और "जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी" को प्रमाणित करते हैं। वो कैसे मान लें कि काम, क्रोध, लोभ, मोह, वासना के बिना भी कोई शून्य से अनंत की यात्रा कर धर्म को स्थापित कर सका है? जिन्होंने जीवहत्या को भक्षण के योग्य माना हो वो कैसे मानें कि श्रीराम की सेना वानर और रीछों की थी? राम के अस्तित्व को मिथ्या मानने वाले इन असुरों के लिए स्वयं तुलसीदास उत्तर देते हैं–

**निर्मल मन जन सो मोहि पावा।**
**मोहि कपट छल छिद्र न भावा॥**

ISSN No. 2581-3528

# सबके राम

**श्री राम ने सभी को अपनत्व के भाव से देखा। वनवासी बंधुओं के सहयोग से वे छोटी-बड़ी सभी चुनौतियों को पार करते हुए रावण दहन कर विजयी हुए। इससे स्पष्ट होता है कि सामाजिक समरसता के सहारे कोई राष्ट्र कितनी भी बड़ी समस्या से पार पा सकता है।**

पल्लवी सिंह

सामाजिक एकता स्थापित करने के लिए श्री राम का जीवन हमें उचित मार्ग दिखाता है। जब राम को देखकर शबरी कहती हैं –

**अधम ते अधम अधम अति नारी।**
**तिन्ह महं मैं मतिमंद अघारी।।**

तब रघुनाथ ने कहा –

**कह रघुपति सुनु भामिनि बाता।**
**मानउं एक भगति कर नाता।।**
**जाति पांति कुल धर्म बड़ाई।**
**धनबल परिजन गुन चतुराई।।**
**भगति हीन नर सोइह कैसा।**
**बिनु जल बारिद देखिअ जैसा।।**

अर्थात् मैं तो मात्र एक भक्ति ही का संबंध मानता हूं। जाति पांति, कुल, धर्म, बड़ाई, धन, बल, कुटुम्ब, गुण और चतुरता इन सबके होने पर भी भक्ति से रहित मनुष्य कैसा लगता है, जैसे जलहीन (शोभाहीन) बादल। श्री राम के यह कथन प्रमाण हैं कि राम तो सबके हैं। उनके जीवन से यह सन्देश मिलता है कि यदि समाज के सभी लोगों को साथ लेकर चलें तो विजय अवश्य प्राप्त होगी। राम चाहते तो रावण से युद्ध के लिए अयोध्या से सेना की सहायता ले लेते या फिर मित्र राज्यों की सेना की सहायता से भी रावण को आसानी से पराजित कर देते, लेकिन उन्होंने अपने जीवन के सबसे कष्टमयी कालखंड में वनवासियों को ही सहयोगी और सलाहकार बनाया। जिसमें केवट निषाद, कोल, भील, और जामवंत आदि रहे। समाज के वह सभी जन श्री राम के साथी रहे जिन्हें आज हम वनवासी, पिछड़ा, अनुसूचित वर्ग मानते हैं, लेकिन श्री राम ने सभी को अपनत्व के भाव से देखा। वनवासी बंधुओं के सहयोग से वे छोटी–बड़ी सभी चुनौतियों को पार करते हुए रावण दहन कर विजयी हुए। इससे स्पष्ट होता है कि सामाजिक समरसता के सहारे कोई राष्ट्र कितनी भी बड़ी समस्या से पार पा सकता है।

राम भक्तों ने भी अपने राम के लिए व्यापक जन आन्दोलन किये, प्राणों की आहुति दी। आज इसी के परिणाम स्वरूप राम मन्दिर निर्माण का संकल्प पूरा हुआ है। राम मन्दिर को केवल हिन्दू आस्था का विषय बनाने के असफल प्रयास निरंतर किये जा रहे हैं, लेकिन राम भक्तों की आस्था, समर्पण और संकल्प के आगे ये नकरात्मक प्रयास कमजोर पड़ते दिखाई देते हैं। जिस प्रकार राम मन्दिर भारत में अनेकता में एकता के भाव को एक नए रूप में स्थापित कर रहा है उससे यह प्रमाणित होता है कि राम सबके हैं, राम जाति पांति की सीमा से ऊपर हैं।

22 जनवरी 2024 को अयोध्या में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा को लेकर पूरा देश उत्साहित है। राम मन्दिर ने भारत के युवाओं में ऊर्जा का अनोखा संचार किया है। राम भक्त प्राण प्रतिष्ठा के ऐतिहासिक पल के साक्षी बनना चाहते हैं। 500 वर्षों बाद होने वाले इस आलौकिक दृश्य को सभी अपनी आंखों से देख लेना चाहते हैं। धर्म, जाति, मत, सम्प्रदाय के भेदभाव को पीछे छोड़ सभी भक्त राम लला के दर्शन के लिए अयोध्या पंहुच रहे हैं।

संगम नगरी प्रयागराज में भगवान श्री राम का एक ऐसा भक्त है जो लोगों को अनूठे अंदाज में अयोध्या आने का निमंत्रण दे रहा है। राम भक्त राजेंद्र तिवारी ने अयोध्या के भव्य राम मन्दिर के मॉडल का मुकुट तैयार कराया है। इसे वह अपने सिर पर रखकर लोगों के बीच जा रहे हैं, न्यौता दे रहे हैं। चौक चौराहों पर लोगों को रोककर राम मन्दिर के बारे में बताते हैं। उसकी दिव्यता और भव्यता का बखान करते हैं। राजेन्द्र तिवारी इंटरनेशनल आर्टिस्ट और गिनीज बुक रिकॉर्ड धारी भी हैं।

हाथों में भगवा ध्वज लिए जय श्री राम के नारे लगाती यह राम भक्त हिन्दू नहीं

ISSN No. 2581-3528

अपितु मुस्लिम हैं। मुस्लिम भक्त शबनम शेख अयोध्या में रामलला के दर्शन करने के लिए मुंबई से पैदल यात्रा पर निकली हैं। रामजी की इस मुस्लिम भक्त का लोग स्वागत कर रहे हैं। शबनम शेख मुस्लिम होते हुए भी श्री राम की परम भक्त हैं। बी. ए. सेकंड ईयर की छात्रा शबनम को रक्षा की दृष्टि से पुलिस प्रोटेक्शन मिला हुआ है। शबनम का मानना है कि रामजी सबके हैं।

बुलंदशहर से तीन राम भक्त दंडवत करते हुए लगभग 600 किलोमीटर की यात्रा तय कर अयोध्या पहुंच रहे हैं। बुलन्दशहर के शेख पुर गड़वा निवासी मनीष, दुष्यंत और विजय अपने गांव से 15 दिसंबर को अयोध्या के लिए निकले थे। दंडवत यात्रा पर निकले मनीष ने बताया कि एक पुरानी बाइक में कुछ बदलाव कर एक रथ तैयार किया और चारों ओर प्रभु श्रीराम के फ्लैक्स लगाए साथ ही अंदर कुछ खाने पीने का सामान रखकर यात्रा शुरू कर दी। उन्होंने तय किया कि इस ऐतिहासिक क्षण के वे साक्षी अवश्य बनेंगे।

राम मन्दिर निर्माण और प्राण प्रतिष्ठा समारोह के लिए सभी राम भक्तों में उत्सुकता दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। आयोजन में सम्मिलित होने के लिए दो युवक साइकिल से पश्चिम बंगाल के मालदा से अयोध्या के लिए निकले हैं। मालदा से अयोध्या की दूरी वैसे तो 800 किमी. से अधिक है, लेकिन रवि विश्वकर्मा और अभिजीत बारासोर का मानना है कि एक भक्त के लिए भगवान् से कैसी दूरी! दोनों भक्तों ने तय किया है कि भगवान् राम के दर्शन के लिए प्रतिदिन औसतन 30 से 50 किलोमीटर की यात्रा करेंगे और वह निश्चित ही प्राण प्रतिष्ठा

महोत्सव में सम्मिलित होंगे।

अमरोहा के कुंवर पाल सिंह राजपूत हाथों में तिरंगा, आखों में चमक और रामलला की जयकार करते हुए वो अयोध्या की ओर बढ़ रहे हैं। रामनगरी अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में

सम्मिलित होने के लिए राम भक्त कुंवर पाल सिंह राजपूत 585 किलोमीटर की यात्रा पूरी कर अयोध्या पहुंचेंगे। इसी बीच घर से पैदल चलकर अयोध्या जाने वाले कुंवर पाल सिंह राजपूत यूपी के अमरोहा जिले के रहने वाले हैं।

कुछ भक्त अयोध्या धाम पहुचं रहे हैं, तो कुछ दीप जलाकर, ध्यान कर, भजन गा कर राम के आने की राह देख कर रहे हैं। सामाजिक समरसता का संदेश देती बरेली की मुस्लिम महिलाएं गणतन्त्र दिवस के बाद रामलला के दर्शन करेंगी। फरहत नकवी ने बताया कि बरेली की जरी कारीगरी मशहूर हैं। वे जरी का काम करने वाली महिलाओं के साथ रामलला के लिए जरी की पोशाक तैयार करा रही हैं। मुस्लिम महिलाएं अपने हाथों से तैयार किए हुए वस्त्र रामलला को समर्पित करेंगी। रामलला की पोशाक पर दस्तकारी का काम हो रहा है।

राममन्दिर निर्माण में राजस्थान के मकराना के संगमरमर का उपयोग किया जा रहा है। संगमरमर की आपूर्ति करने वाले मुस्लिम भाई स्वयं को सौभाग्यशाली मानते हैं कि उन्हें राम मन्दिर का हिस्सा बनने का स्वर्ण अवसर प्राप्त हुआ। दिन रात श्रम कर पत्थरों को अत्यंत खूबसूरती से तराशते मुस्लिम शिल्पकार और कारीगरों का भी यही कहना है कि प्रभु के नाम से उनकी रोजी रोटी चल रही है।

राम मंदिर निर्माण में सभी राज्यों का योगदान है। कोई पत्थर बुंदेलखंड से, तो कोई तेलंगाना से, भरतपुर से गुलाबी पत्थर आया तो राजस्थान के मकराना से संगमरमर। दरवाजों के लिए महाराष्ट्र की टीक की लकड़ी पर नक्काशी के लिए तमिलनाडु के कारीगर पहुंचे, कारीगरी कर उनपर मूर्तियों को उकेरा है। ओडिशा के मूर्तिकारों ने। हैदराबाद के कांट्रेक्टर लगे हैं, तो बंगाल के सुपरवाइजर, मंदिर निर्माण में किसी की जाति या धर्म को देखकर कार्य नहीं दिया गया, अपितु सभी धर्म, जाति के व्यापारियों और छोटे– बड़े कारीगरों को रोजगार मिला है। राम मंदिर सम्पूर्ण राष्ट्र को आर्थिक रूप से सशक्त कर रहा है। सबका कल्याण हो यही सनातन का मूल तत्व है। भविष्य में राम मंदिर निश्चित ही अधर्म पर धर्म की विजय के लिए रामसेतु सिद्ध होगा।

सम्पूर्ण भारतीय समाज अपने राम के लिए उत्साहित एवं आनंदित है। राम मन्दिर से एक बार पुनः सामाजिक समरसता का भाव हर भारतीय के मन में जाग उठा है। समय आ गया है कि भारत के उज्ज्वल भविष्य के लिए अपने आराध्य श्री राम के जीवन से सामाजिक समरसता का सन्देश लें, तभी संगठित समाज खड़ा होगा और राम मन्दिर यथार्थ में राष्ट्र मन्दिर बनेगा।

# सबके राम सबमें राम

**प्रो. (डॉ.) हरेन्द्र सिंह**
सरकार द्वारा 'शिक्षकश्री' विभूषित ख्याति प्राप्त शिक्षाविद, शैक्षिक प्रशासक, प्रोफेसर एवं राष्ट्रवादी चिन्तक

वह घड़ी अब निकट आ रही है जब 500 वर्षों से भी अधिक लम्बे संघर्ष के बाद विक्रम संवत 2080 में पौष माह के शुक्ल पक्ष की द्वादशी तिथि (22 जनवरी 2024) को अयोध्या में नवनिर्मित भव्य राम मन्दिर में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा होगी। रामलला वे प्रभु श्रीराम हैं जो सबके हैं, जो सबमें हैं। प्रभु श्रीराम ने सबको गले लगाया, किसी के साथ भेदभाव नहीं किया, इसीलिए वे जन–जन के राम बने, सामाजिक समरसता के अग्रदूत बने। उन्होंने सम्पूर्ण समाज मे समानता स्थापित करने का कार्य किया।

कवि मैथिली शरण गुप्त ने साकेत में प्रभु श्रीराम के वन गमन प्रसंग में लिखा है, **'प्रस्थान वन की ओर, या लोक मन की ओर, होकर न धन की ओर, हैं राम जन की ओर।'** अर्थात् राम सबके हैं। इसके अतिरिक्त गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्रीरामचरितमानस में लिखा है, **'सिया राम मैं सब जग जानी, करहु प्रणाम जोरि जुग पानी!'** अर्थात् पूरे संसार में श्रीराम का निवास है, सब में प्रभु हैं और हमें उनको हाथ जोड़कर प्रणाम कर लेना चाहिए। श्रीरामचरितमानस की इस चौपाई का मंतव्य है कि जिस व्यक्ति का चरित्र हमारे लिए अनुकरणीय होता है, हम हमेशा उसका सम्मान करते हैं और वह हमारे लिए प्रभु होता है। प्रभु श्रीराम का चरित्र हम सबके लिए अनुकरणीय है। जब हम बालकांड का श्रवण करते हैं या उसे पढ़ते हैं तो उसमें हम प्रभु श्रीराम के चरित्र के माध्यम से सामाजिक सौहार्द आपसी भाईचारा और विश्व बंधुत्व की भावना को देखते हैं।

बालकांड में हम देखते हैं कि उन्होंने गुरु शिष्य परंपरा को निभाते हुए अपने पिताजी राजा दशरथ के वचनों का मान–सम्मान रखा और बिना कुछ सोचे समझे खुशी–खुशी चौदह वर्ष का वनवास स्वीकार कर लिया। अयोध्या कांड में भाई–भाई के अटूट प्रेम को प्रदर्शित करते हुए, चाहे सामाजिक मूल्यों के स्थापना की बात हो या सुंदरकांड एवं किष्किंधा कांड में उनके द्वारा समाज के उपेक्षित और निचले वर्ग के लोगों को अपना साथी बनाने व अपने गले लगाने का प्रश्न हो, उन्होंने सभी स्थानों पर सौहार्द और सामाजिक समरसता का भाव प्रदर्शित किया है।

प्रभु श्रीराम का मानना था कि जब तक समाज के कमजोर और उपेक्षित वर्ग को हम अपने हृदय से नहीं लगाएंगे, तब तक किसी भी समाज या राष्ट्र का उत्थान असंभव है। प्रभु श्रीराम का हृदय विशाल था वह हृदयस्पर्शी भाव अपने मन में रखते थे। उन्होंने कभी ऊंच–नीच अथवा भेदभाव का लेश मात्र भी आचरण नहीं किया। उन्होंने भीलनी माता शबरी के झूठे बेर खाकर सामाजिक समरसता की एक अनूठी मिसाल संपूर्ण समाज में स्थापित की।

प्रभु श्रीराम ने अपने संपूर्ण जीवन में जितने भी कार्य किए, वह अपने लिए नहीं किये। उन्होंने हमेशा स्वहित से ज्यादा राज्य हित, समाज हित और परहित को सर्वोपरि रखा। उनके लिए छूत–अछूत, ऊंच–नीच, अमीर–गरीब के लिए कोई भेदभाव नहीं था। प्रभु श्री राम ने वनवास के दौरान उत्तर से दक्षिण तक विभिन्न वर्ग, धर्म व जातियों के बीच परस्पर

ISSN No. 2581-3528

विश्वास और प्रेम की भावना का संचार किया।

समाज के पिछड़े, दलित, वंचित लोग भी सम्मान पूर्ण जीवन के अधिकारी हैं, यह शिक्षा हमें प्रभु श्रीराम के जीवन से ही मिलती है। प्रभु श्रीराम ने केवट समाज को गले लगाया। वन को जाते समय निषादराज को गले लगाया, जो इस बात का प्रतीक हैं कि समाज में कभी भी जातिगत आधार पर विभाजन नहीं किया जा सकता। निषादराज के घर रुक कर और उन्हें गले लगा कर प्रभु श्रीराम ने सामाजिक समरसता का स्पष्ठ संदेश भी दिया। प्रभु श्रीराम का जीवन जाति, जन्म, चरित्र और भौतिकता से ऊपर है। वे कर्म के भाव को महत्व देते थे, धर्मानुकूल आचरण करते हुए सभी को समान दृष्टि से देखते थे।

प्रभु श्रीराम हम सबके हैं। अपने जीवन के सबसे कष्ट पूर्ण काल में प्रभु श्रीराम ने अपने सहयोगी और सलाहकार भील, कोल, निषाद, केवट, किरात, वनवासी और भालू आदि को बनाया, यदि वह चाहते तो किसी भी राजा अथवा राज्य से या अयोध्या से या जनकपुर से सहायता ले सकते थे। परंतु प्रभु श्रीराम ने उन लोगों को अपना साथी और सहयोगी बनाया जिन्हें आज के युग में वनवासी, आदिवासी, पिछड़ा या अति पिछड़ा कहा जाता है। इन सभी को प्रभु श्रीराम ने सखा कहकर अपने गले लगाया।

सम्पूर्ण जगत में सामाजिक समरसता और सौहार्द की दृष्टि से प्रभु श्रीराम के अतिरिक्त अन्य कोई उदाहरण हमें उनके समान दिखाई नहीं देता। श्रीराम ने अपना संपूर्ण जीवन समाज में व्याप्त भेदभाव और अत्याचार को समाप्त कर सामाजिक समरसता एवं सौहार्द हेतु व्यतीत किया। उनके चरित्र और क्रिया–कलापों में सामाजिक समरसता की भावना अप्रतिम है।

श्रीरामचरितमानस के बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, सुंदरकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किंधाकांड आदि में अति पिछड़े व समाज की मुख्यधारा से दूर वनवासी समाज और जंगलों में रहने वाले समुदाय सहित केवट समाज, भील समाज आदि के साथ मानव समाज ही नहीं, अपितु रीछ, भालू, वानर आदि के मध्य भी प्रभु श्रीराम ने सामाजिक समरसता का श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत किया है। नल, नील, अंगद, हनुमान, सुग्रीव, जामवंत, निषाद, जटायु व माता शबरी आदि के साथ भी प्रभु श्रीराम का व्यवहार सामाजिक समरसता व सौहार्द के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। प्रभु श्रीराम ने अपने जीवनकाल में गुरु वशिष्ठ से लेकर, गुरु अगस्त्य, गुरु मतंग और अन्य सैकड़ों वज्ञानिकों, दार्शनिकों के साथ इनसे सीखने, और इनकी सुरक्षा में भी बिताये, परन्तु दलितों और वंचितों को भी अपने साथ रखा।

प्रभु श्रीराम ने छुआछूत और भेदभाव

**प्रभु श्रीराम अपनी सामाजिक समरसता एवं सौहार्द की शैली के कारण केवल भारत ही नहीं, अपितु पूरी दुनिया में लोकप्रिय हैं। वे विश्व के हर एक इंसान के मन में रचे बसे हैं। वे इस भूलोक और संस्कृति में समाहित हैं। वे सर्वव्यापी हैं, विश्वव्यापी हैं और अखिल विश्व के प्राणाराम हैं।**

जैसी बुराइयों को कभी भी महत्व नहीं दिया। उन्होंने सदैव सामाजिक समरसता की ही प्रेरणा दी है। वनवासी राम ने पग–पग पर समाज के अंतिम व्यक्ति को गले लगाकर समाज को यह संदेश दिया कि प्रत्येक व्यक्ति में एक ही जीवात्मा है, बाहर से भले ही रंग–रूप, वर्ण–भेद के आधार पर अलग दिखते हों, लेकिन अंदर से सब एक ही हैं। उनके जीवन में जाति–पांति का कोई भेद नहीं था, उनका संपूर्ण जीवन सामाजिक समरसता को समर्पित है। उनका सारा जीवन झंझावातों से घिरा रहा परंतु फिर भी उन्होंने सामाजिक समरसता और सौहार्द की भावना का कभी भी त्याग नहीं किया।

प्रभु श्रीराम अपनी सामाजिक समरसता एवं सौहार्द की शैली के कारण केवल भारत ही नहीं अपितु पूरी दुनिया में लोकप्रिय हैं। वे विश्व के हर एक इंसान के मन में रचे बसे हैं। वे इस भूलोक और संस्कृति में समाहित हैं, वे सर्वव्यापी हैं, विश्वव्यापी हैं, अखिल विश्व के प्राणाराम हैं। संपूर्ण ब्रह्मांड में चराचर रूप से नित्य प्रति रमण करने वाले हैं। वे सबके हैं, सबके साथ सदा संयुक्त हैं, सर्वमय हैं।

संपूर्ण समाज में एक समान भाव से भाईचारा, अपनापन, बंधुता, स्नेह, प्रेम, मर्यादा, भक्ति, सम्मान, गरिमा, सम्मान और ऐसी महान भावनाएं सबके साथ समान रूप से रखना, उन्हें मानना, व्यक्त करना और ऐसी विचारधारा को निरंतर बनाये रखना, किसी साधारण मनुष्य में सामान्यतः नहीं पाये जाते। लेकिन ऐसी समरत महत्वपूर्ण और महान भावनाओं के संवाहक प्रभु श्रीराम थे, जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन सौहार्द और सामाजिक समरसता को सम्पूर्ण समाज में स्थापित करने में व्यतीत किया। इस बात पर कभी भी और कहीं भी लेश मात्र भी संदेह नहीं किया जा सकता की संपूर्ण जगत में समरसता स्थापित करने वाले सबसे पहले श्रीराम ही थे।

प्रभु श्रीराम के अयोध्या में नवनिर्मित मंदिर निर्माण में भी सामाजिक समरसता और विभिन्न क्षेत्रों का ध्यान रखते हुए महाराष्ट्र से सागौन की लकड़ी, राजस्थान का पिंक स्टोन मार्बल, कर्नाटक की चट्टान के मूर्ति बनाने वाले पत्थर, गुजरात से मंदिर के गुंबद पर लगने वाला ध्वजदंड, पंजाब और हरियाणा से राम नाम की ईंट, जम्मू, केरल, कर्नाटक, तमिलनाडु, राजस्थान, ओडिसा, बिहार आदि से विभिन्न वर्गों के कारीगर तथा 22 जनवरी को प्राण प्रतिष्ठा में शामिल होने वाले लगभग 8000 अतिथि जिनमें आदिवासी, पिछड़े, दलित, वंचित व विभिन्न संप्रदाय के साधु–संत, खेल, कला, संगीत जगत के साथ–साथ विभिन्न क्षेत्रों व वर्गों के लोग भी इस बात का संदेश देते हैं कि प्रभु श्रीराम जन–जन के राम हैं, सब के राम हैं। ■

ISSN No. 2581-3528

# श्री राम मंदिर अयोध्या में ही क्यों

अनुपमा अग्रवाल
लेखिका एवं समाजसेविका

**अयोध्या की प्राचीनता और राम मंदिर के प्रमाण में हजारों ग्रंथ, शिलालेख और साहित्य गवाही दे रहे हैं। इन अकाट्य प्रमाणों से इतिहास भरा पड़ा है।**

स्कन्दपुराण के वैष्णव खण्ड में अयोध्या महात्म्य अध्याय में वर्णित है कि 12 वीं एवं 13 वीं शताब्दी में हिन्दू अयोध्या को अपना प्रमुख पवित्र तीर्थ स्थल मानते थे। इस स्थान की यात्रा करना अपना परम् सौभाग्य समझाते थे। अयोध्या महात्म्य में राम जन्मभूमि का विस्तार से यशगान किया गया है। स्कन्दपुराण में ही श्री राम जन्म स्थान की स्थिति लोशम आश्रम के पश्चिम में तथा वशिष्ठ कुण्ड के उत्तर में बताई गई है। वाल्मीकि रामायण के बालकाण्ड में उल्लेख मिलता है कि अयोध्या 12 योजन लम्बी और 3 योजन चौड़ी थी।

**कोसल नाम मुदितः,स्फीतो जनपदो महान।**
**निविष्टःसरयूतीरे, प्रभूतधन धान्यवान्।**

अर्थात् सरयू नदी के तट पर सन्तुष्ट जनों से पूर्ण धनधान्य से भरा पूरा उत्तरोत्तर उन्नति को प्राप्त कोसल नामक एक बड़ा देश था। इस देश में मनुष्यों के अदिराजा प्रसिद्ध महाराज मनु की बसाई तीन लोकों में विख्यात अयोध्या नामक नगरी थी। इतिहासकारों के अनुसार कौशल प्रदेश की प्राचीन राजधानी अवध को कालांतर में अयोध्या और बौद्ध काल में साकेत कहा जाने लगा। अयोध्या को भगवान श्री राम के पूर्वज विवस्वान (सूर्य) के पुत्र वैवस्वत मनु ने बसाया था, तब से इस नगरी पर सूर्यवंशी राजाओं का राज महाभारत काल तक रहा। यहीं पर प्रभु श्री राम का दशरथ के महल में जन्म हुआ था।

महर्षि वाल्मीकि ने भी रामायण में राम जन्मभूमि की तुलना इंद्रलोक से की है। कहते हैं भगवान श्री राम के जल समाधि लेने के पश्चात अयोध्या कुछ काल के लिए उजाड़ सी हो गई थी, लेकिन उनकी जन्मभूमि पर बना महल वैसे के वैसा ही रहा। प्रभु श्री राम के पुत्र कुश ने एक बार पुनः अयोध्या का पुनर्निर्माण कराया। इसके पश्चात ईसा के लगभग 100 वर्ष पूर्व उज्जैन के चक्रवर्ती सम्राट विक्रमादित्य ने व उसके पश्चात विभिन्न राजाओं ने समय–समय पर मंदिर की देखरेख व जीर्णोद्धार कराया। इस स्थान को अंतरराष्ट्रीय पहचान 5वीं शताब्दी में तब मिली जब यह एक प्रमुख बौद्ध केंद्र के रूप में विकसित हुआ। तब यह नगरी साकेत के नाम से जानी जाती थी। कहते हैं पहले चीनी भिक्षु फ़ा–हियान और उसके बाद चीनी यात्री ह्वेन त्सांग आया। उसके अनुसार अयोध्या में तब 300 भिक्षु रहते थे और हिंदुओं का एक प्रमुख मंदिर भी था।

ईसा की 11वीं शताब्दी में कन्नौज नरेश जयचंद आया उसने सम्राट विक्रमादित्य के प्रशस्ति शिलालेखों को उखाड़ कर अपना नाम लिखवा दिया। पानीपत युद्ध के बाद जयचंद का भी अंत हो गया। उसके बाद अनेकों आक्रांताओं ने काशी, मथुरा के साथ अयोध्या में भी लूटपाट की और मूर्तियों को खंडित कर दिया। विभिन्न

ISSN No. 2581-3528

आक्रमणों एवं झंझावातों को झेलते हुए भगवान राम की जन्मभूमि पर बना भव्य मंदिर 14 वीं शताब्दी तक बचा रहा। अंततः 1528 में मुगल शासक बाबर के कहने पर उसके सेनापति मीर बाकी ने मंदिर तोड़ कर उसके ऊपर मस्जिद बनवा दी,जो 1992 तक विद्यमान रही।

1949 की सुबह जन्मभूमि स्थल पर पुनः भगवान राम की मूर्तियों को मस्जिद में विराजमान होने के पश्चात मंदिर मुद्दा एक बार फिर से ताजा हो गया। केंद्र सरकार के आदेश पर राम लला की मूर्ति को मस्जिद से निकाल कर राम चबूतरे पर रख दिया गया। तत्पश्चात 6 दिसम्बर 1992 को कारसेवकों द्वारा विवादित ढांचे को गिरा दिया गया। लगभग 500 वर्ष पुराने इस विवाद में कानूनी लड़ाई 136 साल पहले यानि 1885 में शुरू हुई। अयोध्या के राम जन्मभूमि परिसर में चल रहे समतलीकरण के दौरान पुरातात्विक मूर्तियों, खम्बे, शिवलिंग एवं अन्य सामान का गर्भगृह से पाया जाना इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि इस स्थान पर पहले रामलला विराजमान थे। पुरातात्विक महत्व के ये सभी साक्ष्य सदियों पुराने राम मंदिर से जुड़े हैं। राम जन्मभूमि के मुख्य पुजारी आचार्य सतेंद्र दास ने बताया कि समतलीकरण में जो वस्तुएं प्राप्त हुई हैं वह अमूल्य हैं, अष्ट दल कमल भगवान विष्णु के चक्र के समान आकृति एवं कुछ खंडित मूर्तियां मिली हैं।

पुराणों में अयोध्या को हिंदुओं के सात प्रमुख तीर्थ स्थलों में से एक माना गया है। इतिहास में अनेक ऐसे साक्ष्य मिलते हैं, जिनके आधार पर निश्चित ही कहा जा सकता है कि अयोध्या में ही प्रभु श्री राम का जन्म हुआ। इसी वजह से हिन्दू इस स्थल को पवित्र तीर्थ स्थल मानते हैं। पुराण और साहित्य ही नहीं, बल्कि मुस्लिम लेखकों एवं विद्वानों ने भी इस बात को स्वीकार किया है कि अयोध्या श्री राम की जन्मस्थली है और इस बात की पुष्टि भी की है कि विवादित ढांचे से पहले यहां हिंदुओं का मंदिर था, जिसे तोड़कर मस्जिद बनाई गई। 17 वीं शताब्दी के इतिहास में मुस्लिम लेखकों की काफी बड़ी संख्या ऐसी थी जिन्हें इस बात को स्वीकारने में कोई संकोच नहीं था कि विवादित स्थल पर मंदिर तोड़कर मस्जिद बनाई गई। इन लेखकों में ज्यादातर लेखक अवध के ही थे।

'अकबर नामा' के मुगलकालीन लेखक 'अबुलफजल' ने भगवान श्री राम को त्रेतायुग का महापुरुष बताया तो

**श्री राम मंदिर की पुनर्स्थापना से अयोध्या ऐसे नगरी के रूप में पुनर्स्थापित होगी, जहां श्री राम द्वारा दिखाई गई अति सृजनात्मक शक्ति का परिचय दुनिया को मिलेगा।**

'शफीह–ए–चहलनशाही बहादुर शाही' में औरंगजेब की पौत्री ने लिखा है कि बाबरी मस्जिद के निर्माण के लिए राम भूमि मंदिर नष्ट किया गया। यह पुस्तक 17 वीं शताब्दी में लिखी गई है। 1856 में लिखी गई पुस्तक 'हादिक–ए–शाहदा' के लेखक मिर्जा जान ने पुस्तक के नौवें अध्याय में लिखा है कि अपने यश और इस्लाम के फैलाव के लिए पूर्व सुल्तानों ने हिंदुओं और उनके धार्मिक स्थलों को निशाना बनाया। इसके अतिरिक्त उपन्यासकार मिर्जा रजब अली बेग सुरूर ने अपनी पुस्तक 'फसाना ए इबरात' में, हाजी मोहम्मद हसन ने अपनी पुस्तक 'जिया ए अख्तर' तथा इस्लाम संस्कृति के विद्वान व जाने माने लेखक सैयद अब्दुल हाय की 1972 में प्रकाशित पुस्तक के एक अध्याय 'हिंदुस्तान की मस्जिद' में मुस्लिम शासकों द्वारा हिंदुओं के पवित्र मंदिर को तुड़वाकर मस्जिद बनाये जाने का उल्लेख किया गया है।

1528 से 2020 तक के सतत संघर्षों, अनेकानेक बलिदानों, हिन्दु एवं सामाजिक संगठनों की गंगाजल यात्रा, श्री राम शिलान्यास पूजन तथा 6 दिसम्बर की ऐतिहासिक कार सेवा में शहीद कारसेवकों की अस्थि कलश यात्रा के अतिरिक्त कार सेवा के द्वारा पूरे देश को एक साथ जोड़कर चलाये गए अनेक अभियान का ही नतीजा है कि आज उच्चतम न्यायालय में एक लंबी लड़ाई लड़ने के पश्चात सत्य की विजय के साथ श्री राममंदिर के निर्माण की मंगल घड़ी आ गई। श्री राम मंदिर की पुनर्स्थापना से अयोध्या ऐसे नगरी के रूप में पुनर्स्थापित होगी जहां श्री राम द्वारा दिखाई गई अति सृजनात्मक शक्ति का परिचय दुनिया को मिलेगा। मंदिर निर्माण की योजना हमारे पड़ोसी देशों की संस्कृतियों के समान 'समानता का पूर्ण वर्णन' है। यह शोषण एवं दवाब से उठे कष्टों एवं अपमान की याद को समाप्त कर देने वाला सशक्त तथा अनाक्रमण कारी प्रयास है। इस योजना ने ऐसे समय में भारत की संगठनात्मक तथा पंथिक एकता को मजबूत करने में सहायता की है, जब विद्रोही व अलोकतांत्रिक ताकतें जातिवाद, मजहबी कट्टरता फैला रही हैं। श्री राम मंदिर निर्माण की योजना ने भारत को एक नई राष्ट्रीय आत्म पहचान दी है जिससे न केवल राष्ट्रीयतावाद बल्कि अन्तरराष्ट्रीयतावाद को भी सौहार्दपूर्ण बनाया जा सकता है।

ISSN No. 2581-3528

# संस्कृति की पुनर्स्थापना

डॉ. बीरजा शर्मा
सहायक प्रोफेसर बौद्ध अध्ययन विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय

**श्री राम विराट भारतीय संस्कृति के आदर्श हैं। भगवान राम भारत के प्राण है। राम का चरित्र भारतीय संस्कृति की आत्मा है बिना श्री राम के भारतीय संस्कृति निष्प्राण है। श्री राम का आदर्श भारतीय संस्कृति का एक ऐसा दिव्य प्रभामंडल है जो समस्त राष्ट्र तथा विश्व को सदैव आलोकित करता रहेगा।**

**राम नाम रति राम गति राम नाम विश्वास।।**
**सुमिरत सुभ मंगल कुशल दुहुं दिसि तुलसीदास ।।**

सत्यम शिवम सुन्दरम की भारतीय संस्कृति का उद्भव हजारों वर्ष पुराना है। भारत मात्र भूमि का टुकड़ा नहीं है वरन सांस्कृतिक चेतना का जीवंत स्वरूप है। भारतीय राष्ट्र का उद्भव सांस्कृतिक भाव भूमि में हुआ है। श्री राम विराट भारतीय संस्कृति के आदर्श हैं। भगवान राम भारत के प्राण है। राम का चरित्र भारतीय संस्कृति की आत्मा है बिना श्री राम के भारतीय संस्कृति निष्प्राण है। श्री राम का आदर्श भारतीय संस्कृति का एक ऐसा दिव्य प्रभामंडल है जो समस्त राष्ट्र तथा विश्व को सदैव आलोकित करता रहेगा। वास्तव में श्री राम मात्र भारतीय संस्कृति के प्राण पुरुष ही नहीं हैं वरन्, वह विश्व संस्कृति के नायक हैं और विश्व जनमानस ने उन्हें आदर्श पुरुष के रूप में स्वीकार किया है। समाज में सदाचार दुराचार, सत्य, असत्य, आसुरी वृत्तियों एवं देवत्व का संघर्ष शाश्वत है। राम कथा समस्त मानव समाज को संघर्ष में विजय प्राप्त करके कल्याणकारी जीवन की मार्गदर्शिका है। प्रेम, त्याग, तपस्या से ओतप्रोत है राम कथा। राम की पुण्य गाथा मानवीय मूल्यों और आदर्शों से अनुप्राणित है। हनुमान जी की अटूट निष्काम भक्ति, भरत का निश्छल प्रेम, उर्मिला का त्याग, लक्ष्मण का समर्पण एवं सेवा भाव, सीता का पतिव्रत, निर्भीकता आदि राम कथा के समस्त पत्रों के जीवन समाज का मार्गदर्शन करने वाले हैं। समस्त भारतीय संस्कृति का मूल आधार गृहस्थ व्यवस्था है और श्री राम इस व्यवस्था के चरम आदर्श हैं। उन्होंने परिवार और समाज के प्रति उत्कृष्ट त्याग भावना का परिचय दिया एवं अन्याय के विरुद्ध निरंतर जूझने की प्रेरणा दी। उनके चरित्र के आधार पर सामाजिक मर्यादाएं बंधीं एवं आदर्श स्थापित हुए। भारत के युग–युग की सांस्कृतिक उपलब्धियां उच्च जीवन मूल्यों एवं जनसाधारण की आशा आकांक्षाएं राम कथा के साथ जुड़ती गईं और श्री राम भारत की सांस्कृतिक विरासत के सर्वोच्च प्रतीक बन गए।

आस्था यदि मानवीय संवेदना और उत्कृष्टता की बुनियाद पर खड़ी हो तो कभी मरती नहीं है। इतिहास साक्षी है कि भारत की पुण्य भूमि आस्था, अस्मिता और राष्ट्रीय स्वाभिमान की महान गाथा है। बर्बर आक्रांताओं ने भारत पर चोट करने एवं अपमान करने के लिए हमारी संस्कृति और आस्था को ध्वस्त करने के लिए अनेक मंदिरों को तोड़ा। आज भी वह भारत की स्मृतियों में जीवित हैं। श्री राम मंदिर को तोड़ना हमारी आत्मा और सम्मान पर आघात था, क्योंकि भारत के रोम–रोम, कण–कण में राम बसे हैं। भारत अपने गौरव को प्राप्त करने के

ISSN No. 2581-3528

लिए संघर्ष करता रहा। राष्ट्र जो सभ्यता का प्रतिनिधित्व करता है वह खंडित सांस्कृतिक चेतना के साथ जीवित नहीं रह सकता है। राम मंदिर का विरोध इस खंडित चेतना पर आधारित था। इसने भारत के मन को आत्मविश्वास को और पहचान को धूमिल करने का प्रयास किया है। अपनी राष्ट्र के स्वाभिमान और राष्ट्रीय अस्मिता के लिए इतना लंबा संघर्ष बेजोड़ है। राम मंदिर का निर्माण आध्यात्मिक लोकतंत्र का संदेश है। अध्यात्म में प्रतिद्वंद्विता या प्रतिस्पर्धा का कोई स्थान नहीं है। यह उदारता और संवेदना की खोज का प्रवाह है जिसमें नई धाराओं का प्रस्फुटन होना स्वाभाविक है। अखंड हिंदू चेतना इसी का नाम है।

मंदिर की पुनर्स्थापना उच्चतम मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना है। अयोध्या में भगवान श्री राम के मंदिर का निर्माण सत्य, नैतिकता और आदर्शों के उन उच्चतम मानवीय मूल्यों का पुनः राज्याभिषेक है जो मर्यादा पुरुषोत्तम ने अपने जीवन के दौरान स्थापित किए। जब–जब मानवता ने श्री राम का अनुसरण किया तब–तब विकास हुआ। राम मंदिर करोड़ों भारतीयों के संघर्ष और तपस्या का परिणाम है। राम मंदिर का निर्माण भारत की सांस्कृतिक चेतना का मूर्त रुप है। श्री राम भारत की आत्मा, अस्मिता, स्वाभिमान, मर्यादा एवं जीवन मूल्यों के प्रतिनिधि हैं। हम भारतीयों के होठों पर जन्म से मृत्यु तक राम ही रहें, यह हर भारतीय हृदय की कामना होती है। श्रीराम भारतीय राष्ट्रीय स्वाभिमान को हिमालय से समुद्रपर्यन्त जन–जन को एकात्मकता के बांधने वाला रक्षा कवच हैं। अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण न केवल बाबरी मानसिकता का पराभव है, वरन संपन्न, सुखी, सुसंस्कृत, सर्वशक्ति संपन्न 'स्व' का सूर्योदय भी है। यह उस रामराज की दिशा में उठाया वह कदम है जिसकी अभिलाषा प्रत्येक भारतीय को थी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने उदगार में सत्य ही कहा है "श्री राम मंदिर हमारी संस्कृति शाश्वत आस्था और राष्ट्रीय भावना का आधुनिक प्रतीक बनेगा और मंदिर करोड़ों–करोड़ों लोगों की सामूहिक संकल्प शक्ति का भी प्रतीक बनेगा।" अयोध्या में भगवान श्री राम का मंदिर न केवल भारतीय गौरव होगा बल्कि श्री राम के आदर्शों का राष्ट्र मंदिर होगा। इसलिए इस संकल्प रूपी रामयज्ञ, राष्ट्र यज्ञ में सभी भारतीय भाग लें।

जय श्रीराम

**मंदिर की पुनर्स्थापना उच्चतम मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना है। अयोध्या में भगवान श्री राम के मंदिर का निर्माण सत्य, नैतिकता और आदर्शों के उन उच्चतम मानवीय मूल्यों का पुनः राज्याभिषेक है जो मर्यादा पुरुषोत्तम ने अपने जीवन के दौरान स्थापित किए। जब-जब मानवता ने श्री राम का अनुसरण किया तब-तब विकास हुआ। राम मंदिर करोड़ों भारतीयों के संघर्ष और तपस्या का परिणाम है। राम मंदिर का निर्माण भारत की सांस्कृतिक चेतना का मूर्त रुप है।**

ISSN No. 2581-3528

# मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम

**डॉ. शैलजा शर्मा**
सहायक अध्यापिका
राजकीय हाई स्कूल जालखेड़ा बुलंदशहर

**श्री राम सुख-दुःख, लाभ-हानि, जय-पराजय की सीमाओं से ऊपर हैं। श्री राम के चरित्र में किसी तरह की जड़ता, पक्षपात या असहिष्णुता नहीं है। वे समन्वयवादी हैं। वे अत्यंत विनम्र हैं, उनमें मुसीबतों को अवसर में बदलने का विशेष गुण है। वे संघर्ष भी कम नहीं करते हैं। जिसने भी मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम का चरित्र पढ़ा, सुना या देखा वह राममय हो गया। राम का चरित्र ही कुछ ऐसा है कि वह सभी जाति, धर्म, संप्रदाय, प्रांत और देश के लिए आदर्श और अनुकरणीय है।**

**रघुकुल रीति सदा चली आई।**
**प्राण जाए पर वचन न जाई।**

राम एक महापुरुष ही नहीं वरन् एक परंपरा हैं। वे परंपरा हैं सत्य की, शुद्धता की, पवित्रता की, अस्तेय की, अपरिग्रह की, मित्रता की, बंधुत्व की और अनेकानेक गुणों की जो पुरुषों में सर्वोत्तम होते हैं। इसीलिए उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम कहा जाता है। वस्तुतः मर्यादा से अभिप्राय है सीमा और पुरुषोत्तम का अर्थ है 'महान से भी महान व्यक्ति।' भगवान राम सभी तामसिक गुणों से ऊपर हैं और वह महानतम या सर्वश्रेष्ठ उत्तम पुरुषों से भी महान हैं।

संक्षेप में 'मर्यादा पुरुषोत्तम' से अभिप्राय है एक ऐसा महापुरुष जो अपने जीवन में नैतिकता, धर्म और आदर्शों का पालन करता है और जीवन की मर्यादाओं में रहकर आदर्शता की ऊंचाइयों को प्राप्त करता है। इस शब्द का प्रमुख आधार है भगवान राम का चरित्र जो जीवन में समर्पण, सेवा, सत्य परायणता और सामंजस्यपूर्ण आचरण का पर्याय है।

भगवान राम विष्णुजी के सातवें अवतार हैं। वे चौदह कलाओं (अन्नमया, प्राणमया, मनोमया, विज्ञानमया, आनंदमया, अतिशयिनी, विपरिनाभिमी, संक्रमिनी, प्रभवि, कुंथिनी, विकासिनी, मर्यदिनी, संहलादिनी, आहलादिनी) के स्वामी हैं। वे क्षमा, न्याय, दानशीलता, अनासक्ति, निरपेक्षता, नीतिवादिता, सत्यवादिता के पर्याय हैं।

भगवान राम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं इसके रामायण में विविध उदाहरण हैं, जहां भगवान राम की मर्यादा पुरुषोत्तम की छवि परिलक्षित होती है। भगवान राम ने त्रेता युग में रावण का वध करने हेतु धरती पर जन्म लिया। राम एक आदर्श पुत्र हैं। उन्होंने अपने माता–पिता की समस्त आज्ञाओं का पालन किया। श्रीरामचरितमानस की यह सुंदर पंक्तियां दृष्टव्य है –

प्रातकाल उठि कै रघुनाथा।
मातु पिता गुरु नावहिं माथा ।।

प्रातः काल उठकर श्री राम माता पिता गुरुजनों अग्रजनों को शीश नवाते हैं। राम ने अपने पिता की वचनबद्धता का पालन करने हेतु 14 वर्षों के लिए वनवास गमन किया जो उनकी पितृभक्ति को उजागर करता है। वनवास में जब एक मुनि उनकी इस अवस्था के लिए कैकई को दोष देते हैं तो वह कहते हैं कि मुनिवर माता की कृपा के कारण ही मुझे आपके दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इसी सहिष्णुता व सकारात्मकता ने राम को राम बनाया। उनमें आदर, सम्मान, अभिवादन व शिष्टाचार का संस्कार विद्यमान है। राम न सिर्फ आदर्श पुत्र हैं, वरन आदर्श भाई, आदर्श पति, व आदर्श राजा भी हैं, क्योंकि वह अपने सभी कर्तव्यों का पालन पूर्णता के साथ करते

ISSN No. 2581-3528

थे। इस संसार में जहां भाई–बहन संपत्ति के लिए आपस में ही लड़ रहे हैं, वहीं श्री राम ने अपने भाई भरत के लिए पूरा अयोध्या राज्य त्याग दिया था और 14 वर्षों तक अपनी पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण के साथ वन में रहे। श्री राम ने एक पत्नी व्रत का पालन किया। माता सीता का रावण ने अपहरण किया था जिसके फलस्वरूप श्री राम ने रावण का वध करके संसार के समक्ष यह संदेश दिया कि स्त्री की पवित्रता अस्मिता व सुरक्षा पर जब भी चोट की जाएगी तो उस व्यक्ति का वही हश्र होगा जो लंका पति रावण का हुआ। श्री राम के राज्य में प्रजा सुखी तथा समृद्ध थी। जब केवट ने भगवान राम को वनवास जाते समय नदी पार कराई थी, तो केवल एक छोटी सी सहायता मात्र से ही भगवान ने उसे भवसागर से ही पार लगा दिया था। जिनकी केवल एक इच्छा मात्र से ही समस्त सागर सूख सकता था, तथापि श्रीराम समुद्रसे भी मार्ग प्रदानकरने की विनती करते हैं। शबरी की भक्ति से प्रसन्न होकर श्री राम उसे नवधा भक्ति प्रदान करते हैं। सर्वगुण संपन्न भगवान राम ने अतुल्य होते हुए भी एक साधारण जीवन व्यतीत किया। राजा बनने पर ना कोई प्रसन्नता और ना ही वनवास जाते समय कोई कष्ट।

**सुख दुःखे समे कृत्वा लाभालाभो जयाजयो।**

श्री राम सुख–दुख, लाभ–हानि, जय–पराजय की सीमाओं से ऊपर हैं। श्री राम के चरित्र में किसी तरह की जड़ता, पक्षपात या असहिष्णुता नहीं है। वे पूर्णतः समन्वयवादी हैं। वे अत्यंत विनम्र हैं, उनमें मुसीबतों को अवसर में बदलने का विशेष गुण है। वे संघर्ष भी कम नहीं करते हैं। सदगुण, संघर्ष और सहिष्णुता की भावना राम जी को उदात्तगुण से परिपूर्ण बनाते हैं। जिसने भी मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम का चरित्र पढ़ा, सुना या देखा वह राममय हो गया। राम नाम पारस के समान है जिसने भी इसे स्पर्श किया वह कालजई बन गया। राम का चरित्र ही कुछ ऐसा है कि वह सभी जाति, धर्म, संप्रदाय, प्रांत और देश के लिए आदर्श और अनुकरणीय है।

**राम, तुम मानव हो? ईश्वर नहीं हो क्या?**
**विश्व में रमे हुए नहीं सभी कहीं हो क्या?**

राम का जीवन साधारण मनुष्य की असाधारणता का परिचायक है। राम, कृष्णजी या शिवजी की तरह चमत्कार नहीं करते, वरन सामान्य जन की तरह मुश्किल, उनकी मुश्किल है। लूट, डकैती, अपहरण और सत्ता से बेदखली का शिकार होते हैं। जिन समस्याओं से आज आम आदमी जूझ रहा है। राम की पत्नी का अपहरण होता है तो उन्हें वापस पाने के लिए लंका जाते हैं। उनकी सेना एक–एक पत्थर जोड़ पुल बनाती है। वह कुशल प्रबंधक हैं। उनमें संगठन की अद्भुत क्षमता है। जब दोनों भाई अयोध्या से चले थे तो महज तीन लोग थे और जब लौटे तो एक पूरी सेना थी। राम नियम कानून से बंधे हैं, उससे बाहर नहीं जाते।

**भगवान राम ने जो मर्यादा पुरुषोत्तम व्यक्तित्व के उदाहरण प्रस्तुत किए हैं उन आदर्शों को अपनाए बिना हम रामराज्य की कल्पना भी नहीं कर सकते। भातृप्रेम, पिता की आज्ञा का पालन करना, अपनी मर्यादाओं का पालन करने के लिए चट्टान की तरह अडिग रहना। ये गुण हम श्री राम के जीवन से सीख सकते हैं। श्री राम का जीवन हमें सिखाता है कि विपरीत परिस्थितियों में भी किस प्रकार धैर्य से काम लिया जा सकता है सुख और दुख में किस प्रकार समान भाव से रहा जा सकता है।**

राम का संपूर्ण जीवन का यदि हम अध्ययन करते हैं, तो पाते हैं कि राम जी का चरित्र कर्म का संदेश देता है। राम का जीवन वनवास से शुरू होकर अयोध्या लौटने तक विभिन्न संघर्षों से भरा हुआ है। राम अपने सामने आने वाले असामान्य संकटों से भयभीत हुए बिना संयत भाव से मर्यादा में रहकर उन संकटों का सामना करते हुए अद्वितीय विजय प्राप्त करते हैं– जैसे वनवास, राक्षसों का वध, सीता की खोज, समंदर में मार्ग, रावण की पराजय आदि। राम का चरित्र इतना पवित्र व निष्कलंक है कि उन मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम से हम निरंतर प्रेरणा लेते हैं। हम सभी को यह विचार करना है कि हम उनकी मर्यादाओं का पालन करते हुए अपने जीवन,अपने परिवार और अपने देश को सुखी शांतिमय बनाएं। हमें विचार करना है कि हम कहां तक भगवान राम के आदर्शों को अपने जीवन में उतारने का प्रयास कर रहे हैं। भगवान राम ने जो मर्यादा पुरुषोत्तम व्यक्तित्व के उदाहरण प्रस्तुत किए हैं उन आदर्शों को अपनाए बिना हम रामराज्य की कल्पना भी नहीं कर सकते। भातृप्रेम, पिता की आज्ञा का पालन करना अपनी मर्यादाओं का पालन करने के लिए चट्टान की तरह अडिग रहना। ये गुण हम श्री राम के जीवन से सीख सकते हैं। श्री राम का जीवन हमें सिखाता है कि विपरीत परिस्थितियों में भी किस प्रकार धैर्य से काम लिया जा सकता है सुख और दुख में किस प्रकार समान भाव से रहा जा सकता है।

**संदर्भ सूची**

1. श्रीमद भागवद् गीता, पाठ–3 उक्ति–38।
2. राम तुम्हारा चरित्र काव्य हैं, डॉ.सुनील गुलाबसिंग जाधव, (भाग–5), पेज 215
3. www.muslimtoday.in/hindi/ram-your chart is - poetry.in- itself
4. अमर उजाला, समाचार पत्र

# साहित्य में लोक नायक श्रीराम

**रामजन्मभूमि को पुनर्निर्मित करने की आकांक्षा ने पांच सौ वर्षों में संघर्ष हेतु जनमानस को प्रेरित किया। हो भी क्यों न आखिर 'राम' हो जाना हर किसी के लिए संभव थोड़े ही है। साहित्य व समाज दोनों ही 'श्रीराम' के समक्ष सदैव नतमस्तक रहेंगे।**

**प्रो. उर्विजा शर्मा**
**प्रोफेसर हिन्दी विभाग**
**एस डी पी.जी. कॉलेज, गाजियाबाद**

भारत भूमि में कण–कण में श्रीराम बसे हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम लोकनायक श्रीराम इस देश की आत्मा में बसे हुए हैं। इस भारत भूमि में अभिवादन के रूप में राम राम स्वीकार्य है। ऐसे में साहित्य में भी नायक के रूप में श्रीराम का व्यक्तित्व–वर्णन स्वाभाविक ही है। यह परंपरा वेदों में वर्णित अयोध्या नगरी से प्रारम्भ होकर समकालीन साहित्य में भी अनवरत चलती रही है। यदि श्रीराम के नायकत्व का प्रारंभिक साहित्यिक परिचय जानना चाहें तो 'वाल्मीकि रामायण' का उद्धरण सर्वप्रथम आता है। महर्षि वाल्मीकि द्वारा श्रीराम कथा का समग्र परिचय सहज ही मिल जाता है। बौद्ध जातक कथाओं में रामकथा दशरथ जातक और अनामक जातक में मिलती है। जैन साहित्य में रामकथा पर आधारित अनेक ग्रन्थ मिलते हैं, जिनमें प्रमुख हैं–विमल सूरि रचित 'पउम चरियम', भुवनतुंग सूरि द्वारा रचित 'रामचरितम', गुणभद्र द्वारा रचित 'उत्तर पुराण', हरिषेण द्वारा लिखित 'कथाकोष'। इसी प्रकार संस्कृत साहित्य में भी कालिदास द्वारा रचित 'रघुवंश', प्रवरसेन द्वारा रचित 'रावणवध', भवभूति द्वारा रचित 'महावीर चरित', भवभूति द्वारा लिखित 'उत्तर रामचरित', अनंगहर्ष का उद्वात्त राघव श्रीराम कथा का वर्णन है।

श्रीराम धर्म की धुरी माने गये। श्री विष्णु के दशावतारों में श्रीराम को सप्तम अवतारी माना गया है। धर्म की रक्षा के उद्देश्य को लेकर अवतार रूप में श्रीराम के स्वरूप का प्राकट्य हुआ। धर्म के विषय में कहा गया है – धारणात् धर्म इत्याहुः। अर्थात् धर्म, जीवन–समाज की धुरी या धारक तत्व है। लौकिक उत्कर्ष एवं पारलौकिक सिद्धि की प्राप्ति का साधन धर्म है। जब तक धर्म की धारणा शक्ति सहज और सर्वग्राहय रहती है, वह मंगलकारी रहता है। इसी भाव को लेकर भक्तिकाल का प्रादुर्भाव हिंदी साहित्य में हुआ। रामानंद ने रामभक्ति की धारा का प्रणयन किया तथा महाकवि तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' की रचना करके उसे चरम पर पहुंचा दिया। तुलसीदास की निम्न पंक्तियां उल्लेखनीय हैं –

**मुद मंगलमय संत समाजू।**
**जो जग जंगम तीरथराजू**
**सतसंगत मुद मंगल मूला।**
**सोई फल सिधि सब साधन फूला।।**

तुलसीदास के नायक राम प्रभु श्रीराम हैं, जबकि वाल्मीकि के राम मानव राम हैं। यह दोनों महाकवियों का मूल अंतर है। तुलसी के राम मर्यादा पुरुषोत्तम, लोकनायक, मंगलभवन अमंगलहारी हैं, जो प्रत्येक स्थिति में समन्वय की विराट

ISSN No. 2581-3528

चेष्टा करते हुए दिखाई देते हैं। यथा –

**शिव द्रोही मम दास कहावा।**
**सो नर सपनेहु मोहि न भावा।**
**संकर बिमुख भगति चह मोरी।**
**सो नारकी मूढ़ मति थोरी।**

वस्तुतः तुलसीदास ने श्रीराम के माध्यम से तत्कालीन निरंतर त्रास सह रही जनता को आत्मबल दिया है। तुलसी का आविर्भाव ऐसे समय हुआ था जब राजतंत्र के अत्याचार चरम पर थे। राजा निरंकुश और प्रजा परतंत्र थी। ऐसे में रावण के पतन से उन्होंने यह प्रमाणित किया है कि निरंकुश राजा की स्वेच्छाचारिता से कैसा विनाश होता है। तुलसीदास द्वारा रचित श्रीराम का चरित्र एक प्रजापालक एवं आदर्श राजा, मर्यादा पुरुषोत्तम व्यक्तित्व, आदर्श पुत्र, पति एवं पिता हैं। रामराज्य की संकल्पना वस्तुतः राजतंत्र में भी प्रजातंत्र का संदेश है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी लिखते हैं– "रामचरितमानस आरम्भ से अन्त तक समन्वय का काव्य है। तुलसीदास कवि थे, भक्त थे, पंडित सुधारक थे, लोकनायक थे और भविष्य के स्रष्टा थे। इन रूपों में उनका कोई रूप किसी से घटकर नहीं था।"

तुलसीदास ने श्रीराम के चरित्र का बखान रामचरितमानस के अलावा "कवितावली", बरवै रामायण, रामलला नहछू, जानकी मंगल, रामाज्ञाप्रश्न, दोहावली, गीतावली एवं विनयपत्रिका में भी किया है। भक्तिकाल के उपरांत रीतिकाल में केशवदास ने 'रामचन्द्रिका' में श्रीराम का चरित्र वर्णन किया। रामचन्द्रिका दो भागों पूर्वाद्ध एवं उत्तरार्द्ध में विभक्त है। प्रथम भाग में 20 प्रकाश है जिनमें राम के बचपन से रावण वध तक का वर्णन है, जबकि द्वितीय भाग में भरतमिलाप से रामसीता मिलन का उल्लेख है। केशवदास की शैली के विषय में डॉ. विजयपाल का कथन है – "केशवदास तुलसी की भांति भक्त और धार्मिक कवि नहीं थे, अपितु दरबारी कवि थे। अतः दोनों को एक ही कसौटी पर परखना उचित नहीं है।

17 वीं शती में प्राणचंद चौहान ने "रामायण महानाटक कड़ी की रचना की। इसके बाद हृदयराम भल्ला ने 'हनुमन्नाटक' लिखा। जिसमें श्रीराम का जीवनवृत्त, जानकी स्वयंवर से राज्याभिषेक तक प्रस्तुत किया गया है। गुरु गोविंद सिंह कृत 'राम अवतार कथनम', मिहरवान कृत रामायण, गुलाबसिंह द्वारा रचित 'अध्यात्म रामायण', कृष्णलाल कृत रामचरित, निहाल कवि द्वारा रचित 'रामचन्द्रोदय' श्रीराम के चरित्र का व्यापक उल्लेख करते हैं। आधुनिक काल में मैथलीशरण गुप्त द्वारा रचित 'साकेत' में श्रीराम का वर्णन इस प्रकार हुआ है– "राम तुम्हारा चरित स्वयं ही काव्य है, कोई कवि बन जाए स्वयं सम्भाव्य है।" निराला भी "राम की शक्ति पूजा" में मानव रम के अन्तर्द्वन्द्व का चित्रण करते हुए लिखते हैं। "आराधन का दृढ़ आराधन से दो उत्तर"। हिंदी के प्रख्यात लेखक नरेंद्र कोहली ने अपने अनेक निबंधों में श्रीराम के चरित्र प्रसंगों एवं घटनाओं का उल्लेख किया है। श्रीराम के चरित्र को साहित्य में केवल मर्यादा रक्षक के रूप में नहीं वरन् भय भंजन के रूप में भी प्रस्तुत किया गया है। विश्व के महान राजनीतिज्ञ एवं विचारक भी राम के महान जीवन और नैतिक मूल्यों का पालन कर अपने पथ की ओर अग्रसर रहे हैं। जार्ज ग्रियर्सन, जे. एम. मैक्सकाई, फादर कामिल बुल्के आदि श्रीराम के चरित्र से प्रभावित रहे हैं। वस्तुतः भारतीय जनमानस के जीवन में राम–नाम उसी प्रकार अनुस्यूत हैं जिस प्रकार दुग्ध में धवलता। श्रीराम का चरित्र नरत्व के लिए तेजोमय दीप स्तंभ है। बालकृष्ण शर्मा नवीन की रचनाओं में राम का एक अलग रूप है। आधुनिक रचनाओं में विवेचित राम मनुष्य भूमि पर आकर तत्कालीन समाज की सभी विकट परिस्थितियों का सामना करते हैं। नरेश मेहता के शब्दों में –

**धनुष, बाण, खडग और शिरस्त्राण**
**मुझे ऐसी जय नहीं चाहिए**
**बाणविद्ध पारसी सा विवश**
**साम्राज्य नहीं चाहिए।**

उक्त विवरण के आधार पर सहज ही जान सकते हैं कि श्रीराम भारत के जन–जन के हृदय में बसे हैं। साहित्य में भी उनका विविधवर्णी चित्रण हैं। कहीं वे ईश्वर के रूप में प्रतिष्ठित हैं, तो कहीं कठिनाइयों और विपदाओं को झेलकर विजयी होते नायक के रूप में, तो कहीं आदर्श चरित्र का निर्वाह करते मर्यादा पुरुषोत्तम रूप में। प्रत्येक रूप में श्रीराम भारतीय जनमानस की प्राणवायु हैं। यही कारण है कि रामजन्मभूमि को पुनर्निर्मित करने की आकांक्षा ने पांच सौ वर्षों में संघर्ष हेतु जनमानस को प्रेरित किया। हो भी क्यों न आखिर 'राम' हो जाना हर किसी के लिए संभव थोड़े ही है। साहित्य व समाज दोनों ही 'श्रीराम' के समक्ष सदैव नतमस्तक रहेगा।

**श्रीराम के चरित्र को साहित्य में केवल मर्यादा रक्षक के रूप में नहीं, वरन भय भंजन के रूप में भी प्रस्तुत किया गया है। विश्व के महान राजनीतिज्ञ एवं विचारक भी राम के महान जीवन और नैतिक मूल्यों का पालन कर अपने पथ की ओर अग्रसर रहे हैं।**

**संदर्भ - ग्रन्थ**

1. महाभारत, कर्ण पर्व, 109/58/
2. तुलसीदास, रामचरितमानस, बालकाण्ड 1/7/
3. तुलसीदास, रामचरितमानस, लंकाकाण्ड 1/7–8।
4. हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिंदी साहित्य की भूमिका, पृ.104/
5. गणपति चन्द्र गुप्त,साहित्यिक निबन्ध, पृ. 296/
6. सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, राम की शक्ति पूजा, पृ. 63/
7. बालकृष्ण शर्मा नवीन, उर्मिला, 1957 पृ. 189/
8. नरेश मेहता, संशय की एक रात' पृ. 41/

ISSN No. 2581-3528

# जीवन प्रबंधन के अग्रदूत भगवान श्री राम

डॉ. नीलम कुमारी
विभागाध्यक्ष, अंग्रेजी विभाग, किसान पी. जी. कॉलेज सिंभावली, हापुड़ चौ. चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

**भारतीय संस्कृति में मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम का चरित्र एक आदर्श सर्वगुण संपन्न चरित्र का प्रतीक है। राम भारतीय संस्कृति के प्राण पुरुष ही नहीं, वरन वे विश्व संस्कृति के नायक भी हैं। राम का चरित्र हमें जीवन में मर्यादा, समर्पण, सत्य परायणता, सामंजस्यपूर्ण जीवन जीने की प्रेरणा देता है। यही कारण है कि राम जन-जन के रोम-रोम में समाए हैं।**

**मस्य चरितं श्रुत्वा धारयेयुर्गुणाञ्जनाः,**
**भविष्यति तदा ह्येतत् सर्वं राममयं जगत।।**

– श्लोक सरिता

अर्थात् प्रभु श्रीराम के चरित्र को सुनकर जब मनुष्य अपने जीवन में उन गुणों को धारण करेंगे, तो यह संसार राममय हो जायेगा। राम भारतीय सांस्कृतिक चेतना के आधार स्तंभ हैं। भारतीय संस्कृति में मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम का चरित्र एक आदर्श सर्वगुण संपन्न चरित्र का प्रतीक है। राम भारतीय संस्कृति के प्राण पुरुष ही नहीं, वरन् वे विश्व संस्कृति के नायक भी हैं। राम का चरित्र हमें जीवन में मर्यादा, समर्पण, सत्य परायणता, सामंजस्यपूर्ण जीवन जीने की प्रेरणा देता है। यही कारण है कि राम जन जन के रोम–रोम में समाए हैं। राम से भी बड़ा राम का नाम है। वास्तव में राम गुणों के समुद्र हैं। आदिकवि महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण के बालकांड में राम के गुणों का वर्णन कुछ इस् प्रकार किया है।

**धर्मज्ञः सत्यसन्धश्च प्रजानां च हिते रतः।**
**यशस्वी ज्ञानसम्पन्नः शुचिर्वश्यः समाधिमान्।।2।।**

राम धर्म के ज्ञाता, सत्य प्रतिज्ञावाले, प्रजा के कल्याण में निरन्तर संलग्न, यशस्वी, ज्ञानवान पवित्र आचरण युक्त, विनययुक्त तथा योगी हैं।

**प्रजापतिसमः श्रीमान् धाता रिपुनिषूदनः। रक्षिता जीवलोकस्य धर्मस्य परिरक्षिता।।13।।**

वे ब्रह्मा के सदृश हैं, श्री से युक्त, प्रजा के धारक, शत्रुनाशक, जीवलोक के रक्षक एवं धर्म के सर्वथा संरक्षक हैं।

**रक्षिता स्वस्य धर्मस्य स्वजनस्य च रक्षिता ।**
**वेदवेदाङ्गतत्त्वज्ञो धनुर्वेदे च निष्ठितः।।14।।**

स्वधर्म के परिपालक, स्वजनों के रक्षक, वेदों तथा वेदाङ्गों के मर्म को जानने वाले एवं धनुर्वेद में भी निष्ठावान हैं।

**सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञः स्मृतिमान् प्रतिभानवान्।**
**सर्वलोकप्रियः साधुरदीनात्मा विचक्षणः।।15।।**

सभी शास्त्रों के रहस्य के ज्ञाता, सुदृढ़ स्मृति वाले, प्रतिभा सम्पन्न, सभी के प्रिय, सज्जन, आत्मबलयुक्त एवं विवेकसम्पन्न हैं।

**सर्वदाभिगतः सद्भिः समुद्र इव सिन्धुभिः।**
**आर्यः सर्वसमश्चैव सदैव प्रियदर्शनः।।16।।**

जैसे समुद्र सदा नदियों से घिरा हुआ रहता है, उसी तरह राम सज्जनों से सदा मिलते हैं। वे सर्वसुलभ हैं, सभी के प्रति समान व्यवहार करते हैं और सभी अवस्थाओं में प्रिय दिखाई देते हैं।

**स च सर्वगुणोपेतः कौसल्यानन्दवर्धनः।**
**समुद्र इव गाम्भीर्ये धैर्येण हिमवानिव।।17।।**

राम सब गुणों से सम्पन्न हैं, माता कौसल्या के आनन्द को बढ़ाने वाले हैं, समुद्र के समान गम्भीर तथा हिमालय के

ISSN No. 2581-3528

समान धैर्यशाली हैं।

**विष्णुना सदृशो वीर्ये सोमवत्प्रियदर्शनः।**
**कालाग्निसदृशः क्रोधे क्षमया पृथिवीसमः ।।18।।**

वे शक्ति में विष्णु के समान हैं तथा चन्द्रमा की तरह प्रिय दिखाई देते हैं। वे क्रोध में प्रलयकाल अग्नि के समान तथा क्षमा में पृथिवी की तरह हैं।

**धनदेन समस्त्यागे सत्ये धर्म इवापरः।**
**तमेवंगुणसम्पन्नं रामं सत्यपराक्रमम् ।।19।।**

वे दान करने में कुबेर के समान तथा सत्यभाषण में दूसरे साक्षात् धर्म हैं।

भगवान श्री राम के चरित से हम अपने जीवन को न केवल पवित्र, सुंदर व सार्थक बना सकते हैं, बल्कि जीवन प्रबंधन के गुण सीखकर अपने जीवन को सफल भी बना सकते हैं। जीवन में प्रबंधन का विशेष महत्व है। सफल जीवन के लिए केवल कठिन परिश्रम व लग्न ही महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि आंतरिक व बाह्य प्रबंधन नितांत आवश्यक है। आज के युग में प्रत्येक क्षेत्र में प्रबंधन का महत्व बढ़ता जा रहा है। जीवन प्रबंधन का तात्पर्य है कि हमें जीवन कैसे जीना है, समाज में परिवार में कैसे रहना है, अपने जीवन को सफल व सार्थक कैसे बनाना है। एक सफल सार्थक जीवन के लिए कुशल प्रबंधन अति आवश्यक है। इसके लिए मूल्य, रणनीति, विश्वास, प्रोत्साहन, उपलब्धता और पारदर्शिता होना आवश्यक है। यह सभी गुण भगवान श्री राम में विद्यमान हैं। जिस सफल जीवन जीने के लिए हम प्रबंधन की कार्यशाला लेते हैं, अगर हम अकेले राम चरित्र का अनुसरण कर लें, तो किसी कार्यशाला की आवश्यकता नहीं होगी। राम का पावन चरित्र कार्य क्षेत्र से लेकर घर परिवार समाज व राष्ट्र जीवन के प्रबंधन का सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ है। अब तक हम भगवान श्री राम को मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम लोकाभिराम, जन–जन के राम, सबके राम, आदर्श व मर्यादा पुरुषोत्तम रूप में देखते आए हैं, परंतु भगवान श्री राम का एक गुण जो वर्तमान काल में अति अनुकरणीय व प्रासंगिक है। वह है कुशल जीवन प्रबन्धन। भगवान श्री राम संकट की घड़ी में और हर प्रकार के अंधेरे से सूर्य की भांति कुशल प्रबंधन का मार्ग प्रशस्त करते हैं। इसीलिए यहां गोस्वामी तुलसीदास जी की पंक्तियों को उदाहरण के रूप में देना सर्वथा उचित है,

**राम चरित जे सुनत अघाहीं।**
**रस बिसेष जाना तिन्ह नाहीं।।**
**जीवनमुक्त महामुनि जेऊ।**
**हरि गुन सुनहिं निरंतर तेऊ।।**

भावार्थ– श्री रामजी के चरित्र सुनते–सुनते जो तृप्त हो जाते हैं (बस कर देते हैं), उन्होंने तो उसका विशेष रस जाना ही नहीं। जो जीवन्मुक्त महामुनि हैं, वे भी भगवाग के गुण निरंतर सुनते रहते हैं। भगवान श्रीराम के गुणों और उनके जीवन प्रबंधन के सूत्र से हम भी अपना जीवन स्तर ऊंचा बना सकते हैं–

**एक सफल, सार्थक जीवन के लिए कुशल प्रबंधन अति आवश्यक है। इसके लिए मूल्य, रणनीति, विश्वास, प्रोत्साहन, उपलब्धता और पारदर्शिता होना आवश्यक है। यह सभी गुण भगवान श्री राम में विद्यमान हैं।**

भगवान राम एक आदर्श चरित्र माने जाते हैं। उनकी जीवनगाथा से हम बहुत सी बातें सीख सकते हैं। रामायण और रामचरितमानस के माध्यम से, हम अपने दैनिक जीवन में खुद को कैसे प्रबंधित और संचालित करना है, इसकी सीख ले सकते हैं।

**मर्यादित जीवन :** भगवान राम को मर्यादा पुरुषोत्तम कहा गया है। हमारे धर्म शास्त्रों के अनुसार राम सिर्फ एक नाम नहीं अपितु एक मंत्र है, जिसका नित्य स्मरण करने से सभी दुःखों से मुक्ति मिल जाती है। राम शब्द का अर्थ है– मनोहर, विलक्षण, चमत्कारी, पापियों का नाश करने वाला व भवसागर से मुक्त करने वाला। रामचरितमानस के बालकांड में एक प्रसंग में लिखा है–

**नहिं कलि करम न भगति बिबेकू।**
**राम नाम अवलंबन एकू।।**

अर्थात् कलयुग में न तो कर्म का भरोसा है, न भक्ति का और न ज्ञान का। सिर्फ राम नाम ही एकमात्र सहारा है। स्कंदपुराण में भी राम नाम की महिमा का गुणगान किया गया है–

**रामेति द्व्यक्षरजपः सर्वपापापनोदकः।**
**गच्छन्तिष्ठन् शयनो वा मनुजो रामकीर्तनात् ।।**
**इह निर्वर्तितो याति चान्ते हरिगणो भवेत्।**

स्कंदपुराण / नागरखंड

अर्थात् यह दो अक्षरों का मंत्र (राम) जपे जाने पर समस्त पापों का नाश हो जाता है। चलते, बैठते, सोते या किसी भी अवस्था में जो मनुष्य राम नाम का कीर्तन करे। इसमें कोई संदेह नहीं है कि जो शक्ति भगवान की है उसमें भी अधिक शक्ति भगवान के नाम की है।

अगर मर्यादा सीखनी है तो राम चरित्र से अच्छा उदाहरण कोई नहीं हो सकता। रामायण में ऐसे कई प्रसंग आते हैं जहां भगवान श्रीराम ने मर्यादाओं के पालन के लिए त्याग कर आदर्श उदाहरण पेश किया। श्रीराम ने मर्यादा के पालन के लिए 14 साल का वनवास भी सहज रूप से स्वीकार कर लिया। इसीलिए उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम कहा गया। रामायण में ऐसे भी कई प्रसंग आते हैं जहां मर्यादा का पालन न करने पर पराक्रमी व बलशाली को भी मृत्यु का वरण करना पड़ा। जब भगवान राम ने किष्किंधा के राजा बालि का वध किया तो उसने भगवान से प्रश्न पूछा–

**मैं बैरी सुग्रीव पियारा।**
**कारण कवन नाथ मोहि मारा।**

प्रति उत्तर में जो बात राम ने कही वह मर्यादा के प्रति समर्पण को दर्शाती है–

**अनुज वधू, भग्नी, सुत नारी।**
**सुन सठ ऐ कन्या सम चारी।**

अर्थात् अनुज की पत्नी, छोटी बहन तथा पुत्र की पत्नी। यह सभी पुत्री के समान होती हैं। तुमने अपने अनुज सुग्रीव की पत्नी को बलात अपने कब्जे में रखा इसीलिए तुम मृत्युदंड के अधिकारी हो। ऐसे ही मानवीय संबंधों को मर्यादाओं में बांधा गया है। इस प्रकार मर्यादाएं व्यक्ति के मन पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव डालती हैं। वर्तमान समय में जहां पाश्चात्य सभ्यता हमारे बीच घर करती जा रही है, वहीं रामायण एकमात्र ऐसा ग्रंथ और राम ऐसा चरित्र है जो हमें मर्यादित जीवन जीने की शिक्षा देता है।

अपनी लड़ाई स्वयं चुनें एक सबसे महत्वपूर्ण और अनकहा मूल्य जो हम भगवान राम से सीख सकते हैं वह है अपनी लड़ाई स्वयं चुनना सीखना। भगवान राम की कहानी अपनी लड़ाई स्वयं चुनने का आदर्श उदाहरण है। वह जानते थे कि कब किसी उद्देश्य के लिए लड़ना है और कब स्थिति को स्वीकार करना है। राम सुग्रीव के लिए बाली के खिलाफ लड़ना चाहते थे। लेकिन राम बाली की सेना का अनावश्यक नरसंहार नहीं चाहते थे। भगवान राम ने अपनी पत्नी सीता के लिए युद्ध किया। रावण द्वारा उसका अपहरण कर लिया गया था, जिसने भगवान राम द्वारा उसे आत्मसमर्पण करने का अवसर देने के बावजूद उसे छोड़ने से इंकार कर दिया था। भगवान राम जानते थे कि वह अन्याय के खिलाफ लड़ रहे हैं और वह जानते थे कि वह सही पक्ष में हैं। भले ही भगवान राम जानते थे कि वह रावण के विरुद्ध जीतेंगे, भगवान राम ने उन्हें आत्मसमर्पण करने और सीता को वापस लौटाने का अवसर दिया। लेकिन यह रावण का अहंकार था जिसने उसके निर्णय को धूमिल कर दिया। भगवान राम जानते थे कि इस उद्देश्य के लिए लड़ना उचित है और उन्होंने वैसा ही किया।

अपने संसाधनों का सावधानी से उपयोग करें यदि हम भगवान राम को ध्यान से देखें तो यह स्पष्ट संकेत मिलता है कि वे प्रबंधन में निपुण थे। भले ही

**वर्तमान समय में जहां पाश्चात्य सभ्यता हमारे बीच घर करती जा रही है, वहीं रामायण एकमात्र ऐसा ग्रंथ और राम, ऐसा चरित्र है जो हमें मर्यादित जीवन जीने की शिक्षा देता है।**

उनकी वानर सेना रावण की सेना के बराबर नहीं थी, फिर भी वह रावण जैसे बलशाली राजा को हराने में सफल रहे। इस विजय का मुख्य कारण यह था कि वह अपने संसाधनों का सही उपयोग करना जानते थे। उन्होंने अपनी सेना को प्रेरित किया और उन्हें रावण की शक्तिशाली सेना के विरुद्ध युद्ध के लिए जाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने अपने सेनाध्यक्षों की क्षमता का विश्लेषण किया और उन्हें उनकी क्षमता के अनुसार कार्य दिए। उन्होंने सीता को खोजने और मुक्त करने और उन्हें घर लाने के लिए सभी संसाधन जुटाने के लिए अपने नेतृत्व कौशल का उपयोग किया।

**ईमानदारी और चरित्र :** जब एक आदर्श व ईमानदार चरित्र रखने के बारे में सिखाने की बात आती है, तो कोई भी भगवान राम की बराबरी नहीं कर सकता। भगवान राम को उनकी दिव्य स्थिति के कारण नहीं, बल्कि उनके कार्यों के कारण भगवान माना जाता था। वह आदर्श पुत्र, पति, भाई और राजा थे। भले ही वह अयोध्या के राजा बनने वाले थे, फिर भी उन्होंने 14 साल के लिए वनवास में भेजने के अपने पिता के निर्णय पर कभी प्रश्न नहीं उठाया। उनके मन में अपनी सौतेली माँ के प्रति भी कभी कोई दुर्भावना नहीं थी जिसके कारण उन्हें वन में भेज दिया गया था। एक पति के रूप में, वह सीता से बिना शर्त प्रेम करते थे और उन्हें खुश रखने के लिए हर संभव कोशिश करते थे। उन्होंने लोगों में उनकी जाति, धर्म, रंग या लिंग के आधार पर भेदभाव नहीं किया। शबरी इसका सर्वोत्तम उदाहरण हैं।

रणनीतिक गठबंधन विभीषण के साथ भगवान राम के जुड़ाव को मिश्रित भावनाओं के साथ देखा जाता है। विभीषण ने भगवान राम की रावण पर विजय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। राम और विभीषण दोनों धर्म के अनुयायी थे और यही बात उन्हें एक साथ और करीब लाती थी। विभीषण को पता था कि रावण ने सीता का हरण करके गलत किया है। जब विभीषण ने रावण को यह

बात बताने की कोशिश की तो उसे राज्य से निकाल दिया गया। तभी उन्होंने भगवान राम का साथ देने का फैसला किया। विभीषण की बहुत बड़ी भूमिका थी क्योंकि उन्होंने भगवान राम को रावण को हराने और सीता को वापस लेने में मदद की थी। रावण की मृत्यु के बाद विभीषण लंका का राजा बने।

**लोकतांत्रिक नेता :** एक नेता के रूप में भगवान राम लोकतांत्रिक थे। उन्होंने अपनी सेना को अपनी शक्ति बढ़ाने की अनुमति दी और इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि उन्होंने उन पर विश्वास किया। सबसे अच्छा उदाहरण यह है कि भले ही रावण की सेना भगवान राम की सेना से कहीं अधिक श्रेष्ठ थी, फिर भी वह उन्हें इस हद तक प्रेरित करने में सफल रहे और उन्होंने रावण की सेना को हरा दिया। भगवान राम लोकतांत्रिक नायक थे क्योंकि उन्होंने सभी को निर्णय लेने में भाग लेने की अनुमति दी थी। वह अपने प्रतिनिधियों की बात सुनते थे और फिर निर्णय लेते थे। ईमानदारी, बुद्धिमत्ता, साहस, रचनात्मकता, योग्यता और निष्पक्षता जैसे लक्षण एक लोकतांत्रिक नेता की पहचान बनाते हैं। अगर हम ठीक से विश्लेषण करें तो ये भगवान राम के लक्षण भी थे।

**ध्यान केंद्रित :** जब भगवान राम अपने लक्ष्य की ओर आए तो वे बहुत स्पष्ट थे। उनका पूरा ध्यान सीता को बचाने और बुराई को हराने पर था। क्योंकि वह स्पष्ट था कि वह क्या चाहते है और इसे कैसे प्राप्त किया जा सकता है। यह आज के नेताओं को लक्ष्य के प्रति स्पष्ट दृष्टि रखना सिखाता है।

भगवान राम से हमने जो सबक सीखा है वह यह है कि जीवन में हर परिस्थिति का स्वेच्छा से सामना करना चाहिए और हमें अपनी परिस्थितियों, लड़ाइयों और गठबंधनों के प्रति कैसा व्यवहार करना चाहिए। एक नेता के रूप में हमें नैतिक परीक्षण का सामना करते समय अपने अनुयायियों के साथ इसी

प्रकार व्यवहार करना चाहिए। ये सभी बातें भगवान राम के जीवन से सीखी जा सकती हैं।

**कठिन परिस्थिति का सामना करना-** राम का संपूर्ण जीवन ही संघर्ष की गाथा है। राम कठिन परिस्थितियों में भी किसी व्यक्ति को विचलित ना होने का संदेश देते हैं। रामचरितमानस में जिन राम का एक दिन पहले राजतिलक होने जा रहा था। उन्हे सुबह वनवास पर भेज दिया जाता है। वे इस घटना से भी बिल्कुल विचलित नहीं होते हैं बल्कि इसे अपनी पिता की आज्ञा मानकर वन को चले जाते हैं। वो आदर्श नायक के साथ ही आदर्श पुत्र भी हैं।

**कुशल नेतृत्व-**राम एक आदर्श नेतृत्वकर्ता भी हैं। अंगद के समुद्र लांघने के समय उसमें आत्मबल की कमी होने की बात को समझकर उसका उत्साह बढ़ाने के लिए अंगद को लंका भेजते हैं। इससे वे अंगद का उत्साह तो बढ़ाते ही हैं साथ ही रावण तक यह संदेश भी पहुंचाते हैं कि उनके साथ केवल एक हनुमान ही नही हैं, कई और पराक्रमी वीर भी हैं। कुशल नेतृत्व के ऐसे कई उदाहरण रामचरितमानस में मिलते हैं।

**सामाजिकता-** राम चरित्र में सबसे अधिक सामाजिकता का गुण है। राम का समाज के नियमों के पालन के लिए सीता का त्याग करना यह सीखाता है कि आदर्श समाज की रचना के लिए अपने सुखों का त्याग और न्याय की समानता का आदर्श कैसे स्थापित करना है।

इसके अतिरिक्त भगवान श्री राम के चरित्र से हम अनगिनत जीवन प्रबंधन की बातों को सीख सकते हैं।

- ♦ अपनी जिम्मेदारियों को समझें।
- ♦ टीम वर्क में भरोसा रखें।
- ♦ लाइफ प्लान का खाका तैयार रखें।
- ♦ समस्याओं का समाधान ढूंढे।
- ♦ टीम में सबको समान भाव से देखें।

भगवान राम अपना हर काम लगभग प्रबन्धन के ज़रिये ही करते थे और हम भी भगवान राम के जीवन से ये गुण सीखकर अपना जीवन सफल बना सकते हैं।

राम स्वयं एक जीवन दृष्टि हैं वह भगवान होकर भी अपनी कृपा दृष्टि से सब कुछ ठीक करके अहंकार के भागी नहीं बनते बल्कि स्वयं अपने जीवन को आदर्श के रूप में प्रस्तुत करते हैं। राम के गुणों को बताना कठिन ही नहीं नामुमकिन है। क्योंकि कहा भी गया है कि 'हरि अनंत हरि कथा अनंता'

फिर भी राम के चरित्र से सादगी, सरलता, सात्विकता मर्यादा, अनुशासन आदि जीवन में उतारने का संदेश मिलता है–

**राम आराध्य भी हैं और आराधना भी !**
**राम साध्य भी हैं और साधना भी !**
**राम मानस भी हैं और गीता भी !**
**राम राम भी हैं और सीता भी !**
**राम धारणा भी हैं और धर्म भी !**
**राम कारण भी हैं और कर्म भी !**
**राम गृहस्थ भी हैं और संत भी !**
**राम आदि भी हैं और अंत भी !**

# राम मन्दिर निर्माण में महिलाओं का योगदान

**श्रीमती सोनम**
असिस्टेंट प्रोफेसर
डी.पी.एम. इंस्टिट्यूट ऑफ एजुकेशन बहसूमा,
चौ. चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

**राम मन्दिर निर्माण में योगदान देने में मातृशक्ति ने भी बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया है। महिलाओं की भागीदारी को राम मन्दिर के परिपेक्ष्य में अनदेखा नहीं किया जा सकता।**

सारा संसार प्रसन्न है, क्योंकि लम्बे संघर्षो के बाद 22 जनवरी 2024 को नवनिर्मित भव्य राम मन्दिर में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा होगी। यह एक ऐसा अवसर है जो हम सब भारतीयों को गौरवान्वित करता है। इस राम मन्दिर के प्रारम्भ के लिए भूमि पूजन 5 अगस्त 2020 को किया गया था। मन्दिर निर्माण के लिए न जाने कितने लोंगो ने अपने प्राण दिए हैं और जन–जन ने राम मन्दिर निर्माण में अपना योगदान दिया है। राम मन्दिर निर्माण में योगदान देने में मातृशक्ति ने भी बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया है। महिलाओं की भागीदारी को राम मन्दिर के परिपेक्ष्य में अनदेखा नहीं किया जा सकता। अब से लगभग तीस साल पूर्व जब राम मन्दिर निर्माण की अलख जगी तो उसमें राजमाता विजयाराजे सिंधिया, साध्वी ऋतम्भरा और उमाभारती ने दुर्गावाहनी, राष्ट्रसेविका समिति और भारतीय जनता पार्टी के महिला मोर्चा के माध्यम से राम मन्दिर निर्माण आन्दोलन से महिलाओं को जोड़ने का कार्य शुरू किया गया। राम मंदिर के लिए जेल भरो आंदोलन के अन्तार्गत गिरफ्तारी देने की बात हो या फिर कारसेवा करने का काम रहा हो, किसी में भी महिलाएं पीछे नहीं रही हैं। राजमाता विजयाराजे सिंधिया मंदिर आंदोलन का प्रमुख चेहरा मानी जाती थीं, विजयाराजे सिंधिया ही 1988 में बीजेपी की राष्ट्रीय कार्यपरिषद की बैठक में राम मंदिर निर्माण के प्रस्ताव को लाई थीं। विजयाराजे सिंधिया शुरू से ही कभी प्रत्यक्ष तो कभी परोक्ष रूप से राम मंदिर आंदोलन का हिस्सा रही। जब सोमनाथ से अयोध्या के लिए रथयात्रा निकाली गई तो विजयाराजे सिंधिया ने पूरा सहयोग दिया, कारसेवा के दौरान भी अयोध्या में वे अहम भूमिका में रही।

उमा भारती ने भी राम मंदिर निर्माण के आंदोलन में अहम भूमिका निभाई। राम मंदिर निर्माण के समर्थन में देशभर में भ्रमण कर सभाएं कीं और जोश जगाने वाला जबरदस्त भाषण दिया। वहीं उमा भारती को बाबरी मस्जिद विध्वंस मामले की आरोपी भी माना गया था।

राम मंदिर निर्माण आंदोलन में दुर्गा वाहिनी संगठन की अहम भूमिका रही है, जिसकी कमान उस समय साध्वी ऋतम्भरा के हाथों में ही थी। उसके बाद साध्वी ऋतम्भरा ने कहा था कि अब राम मंदिर निर्माण का सपना साकार हो रहा है इस अनुभव को महसूस किया जा सकता है। उसे शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता। साध्वी ऋतम्भरा मंदिर निर्माण आंदोलन का हिस्सा रही हैं।

वर्तमान में अयोध्या में बन रहे भव्य राम मंदिर के निर्माण में यूं तो सैकड़ों इंजीनियर और हजारों श्रमिक अपना योगदान दे रहे हैं, लेकिन मंदिर के पवित्र गर्भगृह और यहां का फर्श बनाने और रामलला के सिंहासन का पूर्ण कामकाज एक युवा महिला वास्तुकार की देखरेख में सम्पन्न हुआ है। महिला आर्किटेक्ट का नाम है दक्षिता अग्रवाल। यह महिलाओं के लिए बहुत ही सौभाग्य की बात है कि रामलला के सिंहासन को बनाने का काम एक महिला आर्किटेक्ट के द्वारा किया गया है।

मंदिर निर्माण के लिए दुर्ग में महिलाओं की टोली ने घर–घर संपर्क कर समर्पण निधि जुटाई है। प्रभु श्रीराम के मंदिर निर्माण में योगदान देने वाली इन महिलाओं का कहना है कि अयोध्या में

मंदिर बनकर तैयार हो गया तो ऐसा लगेगा कि उनका जीवन भगवान के काम आ गया। अयोध्या में प्रभु श्रीराम के मंदिर निर्माण के लिए दुर्ग में हिंदूवादी एवं सामाजिक संगठनों ने समर्पण निधि जुटाने के लिए घर–घर अभियान चलाया। इस अभियान को महिलाओं की टोली का भी साथ मिला। दुर्ग के सुभाष नगर निवासी मानसा मंडली से जुड़ीं अनिता साहू और तारिणी वर्मा भी बिना जात–पात देखे लोगों के घरों का दरवाजा खटखटा कर समर्पण निधि एकत्रित करने जाती थीं। मंदिर निर्माण के लिए लोगों ने अपनी स्वेच्छा से जितना बन पड़ा दान किया। इनकी टोली ने सप्ताह भर में ही 45 हजार रुपये एकत्रित कर लिए। महिलाओं की टोली रोजाना शाम को चार बजे निकलती थी और छह बजे तक घर–घर संपर्क निधि जुटाने का काम करती थीं। जब महिलाएं निधि के लिए आया करती थी तो प्रभु के मंदिर निर्माण को लेकर भक्तों में आनंद का भाव देखने को मिलता था और वे स्वेच्छा से राशि दान करते थे। अनीता बजरंग महिला मानसी मंडली से जुडी हुई हैं। इस मानसा मंडली ने भी मंदिर निर्माण के समर्पण निधि दी थी। वहीं पद्मनाभपुर दुर्ग निवासी शांता पांडेय ने राम मंदिर निर्माण के लिए एक लाख रुपये दान किये, 04 जून 2021 को टोली शांता पांडेय के घर पहुंचीं। जहां शांता ने टोली के सदस्यों को मंदिर निर्माण के लिए एक लाख रुपये का चेक दिया, उन्होंने मंदिर निर्माण के लिए राशि दान करने का विचार पहले से ही कर लिया था। उन्होंने कहा कि रामकाज में अपने छोटे से योगदान से मन को जो संतुष्टि मिली, उसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता है।

कारसेवा में खंडवा की महिलाओं ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। ग्वालियर स्टेशन पर कार सेवा में जा रहीं महिलाओं से एक पुलिसकर्मी ने कहा कि जहां से आई हो लौट जाओ, वरना ठीक नहीं होगा। एक भी महिला घबराई नहीं उन्होंने कहा कि आप गोली चलो दो। शहर से एक दर्जन महिलाओं का समूह अयोध्या पहुंचा था। इन्हीं में पूर्व पार्षद 72 वर्षीय हंसमुखी जोशी भी थीं।

श्रीराम मंदिर निर्माण के लिए महिलाओं ने किस हद तक जाकर योगदान दिया है इसका एक दृश्य जोधपुर में देखने को मिला। राम मंदिर के लिए समर्पण की ऐसी अनोखी भावना की यह कहानी आशा कंवर एवं पूरे गौड़ परिवार की है। शहर के सूरसागर क्षेत्र में रहने वाली 54 वर्षीय आशा कंवर कोरोना पीड़ित हो गईं। उन्होंने अपने सारे जेवर राम मंदिर निर्माण के लिए समर्पित करने की इच्छा व्यक्त की। कोरोना संक्रमण के कारण उनका निधन हो गया। परिजनों ने आशा कंवर की अंतिम इच्छा पूर्ण करने का संकल्प पूरा किया। परिजनों का कहना था कि इन गहनों के बारे में आशा कंवर तय कर गई। ऐसे में इन पर रामजी का ही हक है। बाद में परिजनों ने आशा कंवर के सारे गहनों को बेचा। इससे उन्हें 7.08 लाख रुपये मिले। जिसे उन्होंने राम मंदिर निर्माण के लिए दान कर दिया।

**अयोध्या में बन रहे भव्य राम मंदिर के निर्माण में यूं तो सैकड़ों इंजीनियर और हजारों श्रमिक अपना योगदान दे रहे हैं, लेकिन मंदिर के पवित्र गर्भगृह और यहां का फर्श बनाने और रामलाल के सिंहासन का पूर्ण कामकाज एक युवा महिला वास्तुकार की देखरेख में सम्पन्न हुआ है।**

तीन दशकों की अटूट प्रतिबद्धता और मौन समर्पण के बाद, करमटांड़ निवासी 85 वर्षीय सरस्वती अग्रवाल जनवरी में अयोध्या में श्री राम मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा समारोह में अपना 30 साल का मौन व्रत तोड़ने के लिए तैयार हैं। शबरी की तरह अपने अटूट विश्वास से प्रेरित होकर, अपने जीवन में भगवान श्री राम का स्वागत करते हुए, सरस्वती अग्रवाल ने 30 साल पहले इस गहन यात्रा की शुरुआत की थी। उनका संकल्प अयोध्या में राम मंदिर के निर्माण में योगदान देने के दृढ़ संकल्प के साथ लिया गया था। अब, मंदिर के अभिषेक के महत्वपूर्ण अवसर पर, वह अंततः 'राम...सीताराम...' जैसे प्रिय शब्दों का उच्चारण करते हुए अपनी चुप्पी तोड़ेंगी।

राम मंदिर निर्माण में मुस्लिम समाज की महिलाएं भी बढ़ चढ़कर हिस्सा ले रही हैं। राम मंदिर निर्माण को लेकर निधि समर्पण अभियान में मुस्लिम समाज की महिलाओं ने भी अपना योगदान दिया है। काशी प्रांत की एक मुस्लिम महिला जिसका नाम इकरा खान है, वो पहली मुस्लिम महिला थीं, जिन्होंने रामलला के आंगन के लिए 11000 हजार रुपये की धनराशि अखिल भारतीय संत समिति को दी थी। इस अभियान के दौरान राष्ट्रीय मुस्लिम मंच के सदस्य डॉ. तारीक शाह व उनकी पत्नी चांदनी शाहबानो ने 11,000 का चेक देकर सहयोग किया। राम मंदिर निर्माण के लिए मुस्लिम महिला जाहरा बेगम ने भी चंदा इकट्ठा किया। जाहरा तहेरा ट्रस्ट चलाती हैं और उन्होंने अपने ट्रस्ट के जरिए मुस्लिम समुदाय के लोगों को चंदा देने के लिए प्रेरित किया। जाहरा ने कहा, 'यही भारत की सच्ची भावना एवं परंपरा और विविधता में एकता है।' इसी भावना के तहत अयोध्या में भव्य राम मंदिर के निर्माण के लिए उन्होंने मुस्लिम समुदाय से चंदा देने सहित सभी संभावित तरीकों से मदद करने की अपील की। जाहरा चाहती थी कि मुस्लिम समुदाय के लोग स्वैच्छिक रूप से निधि समर्पण अभियान में बढ़चढ़कर हिस्सा लें और मंदिर निर्माण में चंदा देकर सहयोग करें। उनका कहना है कि मंदिर निर्माण के लिए मुसलमान 10 रुपये से लेकर अपनी इच्छा के अनुसार फंड में योगदान करें।

ये कुछ उदाहरण हैं जो बताते हैं कि राममंदिर निर्माण में महिलाओं ने अपनी महती भूमिका अदा की है। राम सबके हैं, उन्होंने किसी से भेदभाव नहीं किया इसलिए महिलाओं ने भी मंदिर निर्माण में बढ़–चढ़ कर योगदान दिया है।

# श्री राम जन्मभूमि और रोजगार

डॉ. शिवा शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर अंग्रेजी विभाग
झमन लाल पीजी कॉलेज, हसनपुर, अमरोहा

22 जनवरी को अयोध्या धाम में श्री राम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा होने के बाद साल के पहले भाग में ही देश में लगभग 50 हजार करोड़ से अधिक के अतिरिक्त व्यापार हो सकता है। देश में इस अतिरिक्त व्यापार की मांग को पूरा करने के लिए सभी राज्यों में व्यापारियों ने व्यापक तैयारियां कर ली हैं। यह बताते हुए कनफेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (CAIT) के राष्ट्रीय महामंत्री प्रवीन खंडेलवाल ने कहा कि इससे यह सिद्ध होता है कि सनातन अर्थव्यवस्था की जड़ें भारत में बहुत गहरी हैं।

सामाजिक संगठनों के आह्वान पर देश भर में श्री राम मंदिर के उद्घाटन को लेकर अभियान को 1 जनवरी से चलाने से जो उत्साह देश भर के लोगों में दिखाई दे रहा है, उससे देश के सभी राज्यों में व्यापार के बड़े अवसर प्राप्त हो रहे हैं। यह अनुमान लगाया जा रहा है कि जनवरी के महीने में 50 हजार करोड़ रुपये से अधिक का व्यापार होगा। उन्होंने बताया कि इस संदर्भ में विशेष रूप से श्री राम मंदिर के मॉडल की मांग बहुत अधिक है CAIT के राष्ट्रीय अध्यक्ष के मुताबिक यह मॉडल हार्डबोर्ड, पाइनवुड, लकड़ी आदि अन्य सामान से अलग–अलग साइज में बनाये जा रहे हैं। इन मॉडल को बनाने में बड़ी संख्या में महिलाओं को रोजगार मिल रहा है। सभी राज्यों में स्थानीय कारीगरों, कलाकारों एवं हाथ से काम करने वाले लोगों को भी

**22 जनवरी को अयोध्या धाम में श्री राम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा देशभर में अतिरिक्त व्यापार में वृद्धि के साथ ही रोजगार के लिए भी वरदान सिद्ध होगी। इसके लिए सभी राज्यों में व्यापारियों ने व्यापक तैयारियां कर ली हैं। विशेषकर पारंपरिक व्यवसाय के लिए यह अवसर रामराज्य से कम नहीं होगा।**

बड़ा व्यापार मिल रहा है। श्री राम मंदिर का यह दिन देश में व्यापार के साथ साथ रोजगार के नये अवसर भी पैदा कर रहा है। उन्होंने यह भी बताया कि बड़ी संख्या में कुर्ते, टी शर्ट एवं अन्य वस्त्र भी तैयार किए जा रहे हैं। जिन पर श्री राम मंदिर के मॉडल की हाथ से कढ़ाई हो रही है या फिर छपाई हो रही है और खास बात यह है कि मूल रूप से कुर्ते बनाने में खादी का उपयोग हो रहा है।

**इन व्यवसायों को मिलेगा बढ़ावा :** 22 जनवरी को देश भर में दिवाली मनाये जाने के आह्वान को देखते हुए मिट्टी के दिये, रंगोली बनाने हेतु विभिन्न रंग, फूलों की सजावट के लिए फूल तथा बाजारों एवं घरों में रोशनी करने के लिए बिजली के सामान को उपलब्ध कराने वाले वर्ग को भी बड़ा व्यापार मिलने की संभावना है। वहीं देश भर में प्रचार सामग्री जिसमें सड़कों पर लगने वाले होर्डिंग, पोस्टर, बैनर, पत्रक, अन्य साहित्य, स्टीकर आदि को भी बड़ा व्यापार मिलेगा। श्री राम मंदिर के कारण देश भर में संगीत व्यवसाय से जुड़े लोग भी इस अभियान में व्यापार से अछूते नहीं है। बड़ी मात्रा में देश भर में श्री राम मंदिर को लेकर गीत बन रहे हैं और विशेष बात यह है कि छोटे और अनजाने गीतकार, संगीतकार एवं गायकों को काम मिल रहा है वहीं सभी शहरों में काम कर रही ऑर्केस्ट्रा पार्टी भी श्री राम मंदिर से जुड़े कार्यक्रमों को करने के लिए पूरी तैयारियों में जुटी हैं।

**रोजगार का प्रवेश द्वार :** रामनगरी के ये प्रवेश द्वार "प्रबिसि नगर कीजे साब काजा", का संदेश देते दिखाई देंगे। इन प्रवेश द्वारों को रामायण के पात्रों के नाम पर व रामायण की थीम पर विकसित किया जा रहा है। प्रवेश द्वारों के निर्माण में अवध की वास्तुशैली की झलक दिखाने का ध्यान रखा जा रहा है। रामनगरी में जिन प्रवेश द्वारों का निर्माण होना है, उनमें लखनऊ मार्ग पर श्रीरामद्वार, गोरखपुर मार्ग पर हनुमान द्वार, गोंडा मार्ग पर लक्ष्मण द्वार, प्रयागराज मार्ग पर भरत द्वार, अंबेडकर नगर मार्ग पर जटायु द्वार व रायबरेली मार्ग पर गरुण द्वार का निर्माण किया जाना है। इन मार्गों का चौड़ीकरण होगा, साथ ही इन द्वारों के आसपास यात्री सुविधाओं को विकसित किया जाएगा। इन प्रवेश द्वारों के आसपास रोजगार केंद्र विकसित करने

की तैयारी है। हर द्वार के पास पार्किंग से लेकर जन सुविधाओं का इंतजाम होगा। होटल, रेस्टोरेंट, धर्मशाला, चार्जिंग प्वाइंट, ग्रीन एरिया विकसित किया जाएगा। इससे आसपास के लोगों को रोजगार मिलेगा। जहां प्रवेश द्वार बनाए जाने हैं, ज्यादातर इलाके ग्रामीण क्षेत्र के हैं, ऐसे में इन इलाकों का भी विकास होगा।

क्षेत्रीय पर्यटन अधिकारी आरपी यादव ने बताया कि सभी प्रवेश द्वार के लिए पांच–पांच एकड़ जमीन अधिग्रहीत की जाएगी। अब तक लखनऊ मार्ग पर हाईवे पर फिरोजपुर गांव में प्रवेश द्वार, रायबरेली–अयोध्या मार्ग में सरियावां गांव में बनने वाले प्रवेश द्वार व अकबरपुर अयोध्या मार्ग में राजेपुर के पास बनने वाले प्रवेश द्वार में जमीन अधिग्रहण का काम पूरा किया जा चुका है। इनका बजट शासन को भेजा गया है। शेष तीन अन्य द्वारों के लिए अभी तक 25 फीसदी जमीन अधिग्रहीत की जा चुकी है। जमीन अधिग्रहण का काम पूरा होते ही प्रवेश द्वार को आकार देने का काम शुरू हो जाएगा, पूरी योजना पर 140 करोड़ खर्च होने का अनुमान है।

**राम जी करेंगे बेड़ा पार :** कर्नाटक के चुनावी माहौल में भले 'बजरंग बली' साथ देने आ गए हों, लेकिन इकोनॉमी का बेड़ा पार तो राम जी ही करने वाले हैं। उत्तर प्रदेश के अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि मंदिर तैयार हो रहा है, जो आने वाले दिनों में अपरंपार रोजगार भी दिलाएगा। हाल में ताज होटल्स ने अयोध्या में दो बड़े लग्जरी होटल खोलने का ऐलान किया है। इसके अलावा ओयो ने 20 से 25 बजट होटल्स विकसित करने की प्रतिबद्धता जताई है। इतना ही नहीं सरोवर पोर्टिको समेत रेडिसन और अन्य बड़े होटल ब्रांड अयोध्या पहुंच रहे हैं।

**निवेश की बारिश :** उत्तर प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार अयोध्या को ग्लोबल सिटी के तौर पर विकसित कर रही है। इसके लिए 20,000 करोड़ रुपये से ज्यादा का निवेश किया जा रहा है। एक इंटरनेशनल टूरिस्ट सेंटर के लिए एक इंटरनेशनल एयरपोर्ट बनाया गया और रेलवे स्टेशन वर्ल्ड क्लास। ये सभी सेक्टर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार पैदा करेंगे। इसके अलावा पर्यटकों के बढ़ने से अयोध्या में स्थानीय उत्पादों, हस्तशिल्प और अन्य वस्तुओं की मांग भी बढ़ेगी। इससे निचले तबके तक रोजगार का प्रसार होगा। जन्मभूमि पर भव्य राम मंदिर निर्माण के बीच केंद्र और प्रदेश सरकार रामनगरी अयोध्या को आधुनिक सुख–सुविधाओं से युक्त वैश्विक पर्यटन नगरी बनाने की कवायद में जुटी है, जिसके लिए 30 हजार करोड़ से ज्यादा की परियोजनाओं पर काम चल रहा है।

**अयोध्या विकास प्राधिकरण ने विजन डाक्यूमेंट तैयार किया है और इसके तहत लगभग 12 लाख लोगों को रोजगार देने की व्यवस्था होगी। इसमें 4 लाख लोगों को प्रत्यक्ष रूप से, तो 8 लाख लोगों को परोक्ष रूप नौकरी देने का लक्ष्य रखा गया है। इसके लिए 9 सेक्टर चयनित किए गए हैं।**

भविष्य की वैश्विक पर्यटन नगरी अयोध्या को आधुनिक सुख–सुविधाओं से लैस करने के लिए कारोबारियों और उद्यमियों ने भी सरकार को हजारों करोड़ रुपये निवेश का प्रस्ताव दिया है। अकेले जिला उद्योग केंद्र को 14,288 करोड़ के निवेश का प्रस्ताव मिला है। निवेश के प्रस्ताव धरातल पर उतरे तो रामनगरी में आधुनिक सुख–सुविधाओं की सौगात मिलेगी। साथ ही उद्योग को बढ़ावा मिलेगा, जिससे 42 हजार रोजगार भी सृजित होंगे।

**रामनगरी में लाखों लोगों को मिलेगा रोजगार :** उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ अयोध्या के विकास और राम मंदिर के निर्माण को लेकर बेहद गंभीर हैं। इस बात का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि मुख्यमंत्री स्वयं हर महीने राम मंदिर के निर्माण कार्य के साथ ही अयोध्या के विकास को लेकर लगातार बैठकें कर रहे हैं। बता दें कि राज्य सरकार अयोध्या को सिर्फ धार्मिक स्थल के तौर पर ही नहीं बल्कि रोजगार हब के तौर पर विकसित करने की तैयारी कर रही है। इसके लिए अयोध्या विकास प्राधिकरण ने विजन डॉक्यूमेंट तैयार किया है और इसके तहत लगभग 12 लाख लोगों को रोजगार देने की व्यवस्था होगी। इसमें 4 लाख लोगों को प्रत्यक्ष रूप से, तो 8 लाख लोगों को परोक्ष रूप से नौकरी देने का लक्ष्य रखा गया है। इसके लिए 9 सेक्टर चयनित किए गए हैं। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने धर्म नगरी को रोजगार हब के तौर पर ज्यादा बेहतर बनाने के निर्देश भी दिये हैं, ताकि युवाओं की किस्मत बदल सके।

**अन्य सुविधाओं में बढ़ोतरी :** वर्तमान में अयोध्या और आसपास के लोगों को रोजगार के लिए सीमित साधन उपलब्ध हैं। राम मंदिर के गर्भ गृह को दर्शन के लिए आने वाले लोगों के अलावा खुदरा व्यापार और सरकारी नौकरियां ही रोजगार के मुख्य साधन हैं। यहां तक कि अयोध्या में बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं भी उपलब्ध नहीं हैं। इसी वजह से गंभीर रोग के मरीजों को लखनऊ इलाज के लिए आना पड़ता है। अब जब अयोध्या में राम मंदिर के निर्माण के साथ ही अयोध्या को विश्व स्तरीय सुविधाओं से लैस करने का खाका तैयार किया गया है, तो इससे लोगों के लिए रोजगार के नये रास्ते भी खुलेंगे। उद्योग से लेकर होटल, अस्पताल की सुविधाएं बढ़ेंगी तो स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के नये रास्ते खुलेंगे।

**संदर्भ सूची -**


https://hindi.news18.com
https://amritvichar.com
https://tv9hindi.com
https://amarujala.com

ISSN No. 2581-3528

# भारतीय संस्कृति में श्री राम का चरित्र

डॉ. कामिनी चौहान

**राम ही तो करूणा में हैं, शांति में राम हैं**
**राम ही है एकता में, प्रगति में राम हैं**
**राम बस भक्तों नहीं, शत्रु के भी चिंतन में हैं**
**देख तज के पाप रावण, राम तेरे मन में हैं**
**राम तेरे मन में हैं, राम मेरे मन में हैं**
**राम तो घर-घर में हैं, राम हर आँगन में हैं**
**मन से रावण जो निकले, राम उस के मन में हैं।**

भारतीय संस्कृति में पुरुषोत्तम भगवान श्री राम का चरित्र एक आदर्श मर्यादित सर्वगुणसंपन्न चरित्र का प्रतीक है। राम शब्द का अर्थ है रमंति इति रामः जो रोम–रोम में रहता है, जो सम्पूर्ण ब्रह्मांड में रमण करता है वही राम हैं। बाल्यकाल से ही शांत स्वभाव के वीर पुरुष श्री राम ने मर्यादाओं व सम्मान को हमेशा सर्वोच्च स्थान दिया। इसी वजह से श्री राम को मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के नाम से जाना गया। श्रीराम का जन्म दिवस चैत्र शुक्ल पक्ष की नवमी को रामनवमी के रूप में मनाया जाता है। श्री राम अयोध्या के राजा दशरथ और रानी कौशल्या के सबसे बड़े पुत्र व भगवान विष्णु के सातवें अवतार थे। माता सीता जो लक्ष्मी का अवतार मानी जाती हैं उनकी पत्नी थी। श्री राम का चरित्र में शांत स्वभाव, मृदुल भाषा, भारतीय संस्कृति के अनुरूप पारिवारिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन के उच्चतम आदर्श के साथ–साथ व्यक्तित्व विकास लोकहित तथा सुव्यवस्थित राज्य संचालन के समस्त गुण विद्यमान थे। श्री राम अपने जीवनपर्यंत न्याय एवं सत्य की प्रतिष्ठा के लिए दीनों, असहायों, संतों और धर्मशीलता की रक्षा के लिए अनवरत प्रयत्नवान रहे, जिसने उन्हें भारत के जन–जन के मानस मंदिर में अत्यंत पवित्र और उच्च स्थान पर आसीन कर दिया। वेद कहते हैं –

**अनुव्रतः पितुः पुत्रो, मात्रा भवतु सम्मानाः।**

पुत्र पिता के व्रत का पालन करने वाला हो और माता के मन की इच्छा पूर्ण करने वाला हो। अथवा "मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन, मा स्वसारमुत स्वसा। भाई बहन से

**राम विराट भारतीय संस्कृति के आदर्श हैं। राम संस्कृति का अर्थ है भारतीय संस्कृति, मानवीय संस्कृति, और विश्व संस्कृति। राम भारतीय संस्कृति के प्राण पुरुष ही नहीं, वरन वे विश्व संस्कृति के नायक भी हैं।**

द्वेष ना करें और बहिन बहिन से द्वेष ना करें। इस प्रकार परिवार में सुख और शांति के लिए नैतिक आदर्श की स्थापना करने वाले जितने भी आदर्श वेद में हैं उन सब का भली प्रकार पालन करने वाला भारतीय संस्कृति में यदि कोई चरित्र है तो वह श्री राम का चरित्र ही है। राम के चरित्र में एक नहीं बल्कि कई व्यक्तित्व समाहित थे जिसमें भरत के लिए आदर्श भाई, हनुमान के लिए स्वामी, प्रजा के लिए नीति कुशल व न्याय प्रिय राजा, सुग्रीव व विभीषण के लिए परम मित्र, केवट व शबरी के लिए सभी धर्म को समान मानने वाले व्यक्तित्व के रूप में भगवान श्रीराम को पहचाना जाता है। इन्हीं गुणों के कारण श्रीराम को मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के नाम से पूजा जाता है।

वाल्मीकि रामायण में श्री राम का उज्ज्वल चरित्र वर्णित है। रामायण के अनुसार आदिकालीन मनु के सात पुत्र थे जिनकी एक शाखा में भागीरथ, अंशुमान, दिलीप और रघु आदि हुए और दूसरी शाखा में हरिश्चंद्र आदि। वैवस्वत मनु के इसी वंश का नाम आगे चलकर सूर्यवंश हुआ जिसमें श्री राम ने अयोध्या में जन्म लिया। श्री राम एक आदर्श पुत्र, पति, सखा, भ्राता, नीतिवान आदर्शवादी, दयालु, न्यायकारी और कुशल महाराज थे। वाल्मीकि कृत रामायण के सांगोपांग अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भगवान श्री राम का संपूर्ण जीवन वेदमय था। कुछ वैदिक शब्द राम के चरित्र में पूर्णतया लागू होते हैं। उनमें से एक शब्द सामवेद मंत्र 185 में आया शब्द 'मित्र' है, मित्र का अर्थ है जिनका स्नेह प्रत्येक प्रकार से त्राण करने वाला होता है। श्री राम की मित्रता का उदाहरण सुग्रीव व विभीषण के साथ देखा जा सकता है। श्री राम जैसे महापुरुष अपने संपर्क में आने वालों को बुराई से बचाते हैं और अच्छे कर्मों, सद्गुणों की प्रशंसा करते हैं, और संकट आने पर इसके प्रत्युपकारो में प्राणपण से सहायता करते हैं और आवश्यकता पड़ने पर अपना सब कुछ देने को तैयार रहते हैं। रावण से युद्ध में मेघनाथ के द्वारा भी लक्ष्मण के आहत और मूर्छित हो जाने पर जहां राम ने अपने अधूरे काम को देखकर खिन्नता प्रकट की। वहीं विभीषण को दिए वचन का पूर्ण न होने पर बहुत अधिक दुख प्रकट किया। भगवान श्री राम बड़े नीतिमान

ISSN No. 2581-3528

पारखी और अपनी दूरदर्शिता से क्षण भर में विषम परिस्थितियों को सुलझाने में बड़े कुशल और सिद्ध हस्त थे।

श्री राम प्रातः काल उठकर सबसे पहले अपने माता–पिता को प्रणाम करते फिर नित्य कर्म स्नान आदि से निवृत्त होकर उनकी आज्ञा ग्रहण करते थे। भगवान राम के राज्याभिषेक के समय जब मां कैकई ने भरत को राजपाठ और भगवान श्री राम को 14 बरस का वनवास दिलाया तो भगवान राम ने विरोध में एक शब्द भी नहीं कहा वे शीघ्र ही वन गमन के लिए तैयार हो गए। इसके बाद भी उन्होंने माता कैकेई का कभी तिरस्कार नहीं किया और उन्हें अपनी माता की तरह प्रेम किया। माता–पिता, गुरुजनों आदि के साथ व्यवहार की शिक्षा राम के चरित्र से ग्रहण करनी चाहिए। शबरी और केवट के साथ भगवान श्री राम की भेंट तथा व्यवहार आज समाज में ऊंच–नीच व बड़े छोटे के अंतर को खत्म करता प्रतीत होता है।

भगवान श्री राम के चरित्र से पता चलता है कि मर्यादा ही जीवन की कसौटी है। मर्यादाहीन मनुष्य पशु समान और दानव है। राम के चरित्र ने तो वानरों को भी मर्यादित कर दिया था। मर्यादा में त्याग, संघर्ष, लोक अपवाद आदि भी सहने पड़ते हैं। राम के चरित्र में मर्यादा प्रत्यक्ष प्रतीत होती है, स्वभाव से अति विनम्र पुष्पों से भी अधिक सुकोमल श्री राम अपनी मर्यादाओं के लिए वज्र से भी अधिक कठोर हो गए किंतु अपनी मर्यादाओं को कभी नहीं छोड़ा। श्री राम कथा का विस्तार न केवल भारत में बल्कि जावा, सुमात्रा, इंडोनेशिया, कंबोडिया, मलेशिया आदि देशों और द्वीपों में भी मिलता है। बैंकॉक में रामायण सम्मेलन होता है और मॉरिशस में रामचरितमानस लाखों की संख्या में भारत से मंगाकर घर–घर पहुंचाई जाती है। भगवान श्री राम का चरित्र केवल हिंदुओं में ही आराध्य नहीं हैं बल्कि ईसाईयों और मुसलमानों में भी राम का चरित्र पूजनीय है। पाकिस्तानी शायर जफर अली खान ने लिखा है,–

**नक्शे तहजीबे हनूद अपनी नुमाया है अगर, तो वो सीता से है, लक्ष्मण से है, राम से है।**
**मैं तेरे साजये तस्लीम पै सर धुनता हूं, कि यह इक दूर की निस्वत तुझे इस्लाम से है।**

राम विराट भारतीय संस्कृति के आदर्श हैं। राम संस्कृति का अर्थ है भारतीय संस्कृति, मानवीय संस्कृति, और विश्व संस्कृति। राम भारतीय संस्कृति के प्राण पुरुष ही नहीं, वरन वे विश्व संस्कृति के नायक हैं। विश्व जनमानस ने उन्हें आदर्श पुरुष के रूप में स्वीकार किया है।

**आज के युग में राम और रामायण का अमर जीवन संदेश यही है कि भूले, भटके राक्षस वृत्ति में फंसा मानव समाज को अपने जीवन को पवित्र और सुंदर बनाये। राम के चरित्र से खानपान, रहन-सहन में सादगी, सरलता और सात्विकता को जीवन में उतारने का संदेश मिलता है।**

**लव निमेष महुं भुवन निकाया।**
**रचहिं जासु अनुशासन माया।।**
**भक्ति हेतु सोई दीन दयाला।**
**चितवत चकित धनुष मखशाला।**

राम के चरित्र से पता चलता है कि यदि जीवन को सुखी और शांतिपूर्ण बनाना है तो एक पत्नी व्रत का आचरण करना चाहिए क्योंकि कभी ना बुझने वाली भोग और कामवासना की आग से न जाने कितने परिवार और व्यक्तित्व जल चुके हैं। चित्रकूट प्रवास काल में शूर्पणखा श्री राम को अपनी ओर आकर्षित करती है तथा राम के सामने विवाह का प्रस्ताव रखती है पर राम अपनी पत्नीव्रता धर्म पर खरे उतरते हैं और शूर्पणखा को देवी कहकर संबोधित करते हैं। इससे यह संदेश मिलता है कि एक पत्नीव्रती बनकर कामवासना को धीरे–धीरे संयमित करने में ही मानव का कल्याण निहित है। यदि भारतीय संविधान में समानता के अधिकार को देखें तो न्यायिक प्रक्रिया में हर व्यक्ति को स्वयं का पक्ष पूर्ण रूप से प्रस्तुत करने का पूर्ण अधिकार है उसी तरह श्रीराम ने भी जातिगत भेदभाव के बिना निषादराज से मित्रता की उन्हें वही सम्मान दिया जो उनके बाकी राज मित्रों को मिला हुआ था। रंगभेद ऊंच नीच नस्लभेद को अस्वीकार करते हुए रघुनंदन ने भीलनी शबरी माता के जूठे बेर बड़े प्रेम में आधार के साथ स्वीकारे। एक राजा के रूप में वह अपने अधीन प्रजा को समान रूप से देखते हुए उनके अधिकारों के संरक्षक थे। आज के युग में राम और रामायण का अमर जीवन संदेश यही है कि भूले, भटके राक्षस वृत्ति में फंसा मानव समाज अपने जीवन को पवित्र और सुंदर बनाये। राम के चरित्र से खानपान, रहन–सहन में सादगी, सरलता और सात्विकता को जीवन में उतारने का संदेश मिलता है।

परमात्मा की सत्ता पर विश्वास करके उनके बताएं गए मार्ग पर चलकर मानव जीवन को सरल बनाने का संदेश भी मिलता है। भगवान राम भारतीय संस्कृति व गृहस्थ व्यवस्था के मूल आधार व चरम आदर्श हैं। श्री राम ने समाज और परिवार के प्रति अपना अगाढ़ प्रेम और अन्याय से जूझने की निरंतर प्रेरणा दी है। राम के चरित्र को आधार मानकर समाज में मर्यादाएं बंधी और आदर्श स्थापित हुए। राम के चरित्र से ही भारतीय संस्कृति एक विश्व संस्कृति के रूप में उभर कर सामने आई है। भारत के युग–युग की सांस्कृतिक उपलब्धियां उच्च जीवन मूल्य और जनसाधारण की आशा, आकांक्षाएं राम कथा के साथ जुड़ती गईं और श्रीराम भारत की सांस्कृतिक विरासत के सर्वोच्च प्रतीक बन गए हैं। उनका चरित्र भारतीय समाज में दिशा निर्देशक प्रकाश स्तंभ है। राम के चरित्र से मानवता, सुख, शांति, उन्नति और सेवा भाव का पता चलता है और रावण के चरित्र से दानवता, दुख, अशांति, पीड़ा एवं अभाव आदि।

ISSN No. 2581-3528

# राम मंदिर से राष्ट्र मंदिर की ओर

डॉ. मंजरी गुप्ता
असिस्टेंट प्रोफेसर जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय

**मर्यादा पुरुषोत्तम राम, यह नाम किसी एक धर्म का पर्याय नहीं है, यह पर्याय है भारत का। देश के जनजीवन और दिनचर्या से यदि राम शब्द को हटा दिया जाए, तो यह भारत नहीं रह जाएगा। जिस प्रकार हिमालय व गंगा के बिना भारत का अस्तित्व नहीं है उसी प्रकार भारत के अस्तित्व के प्राणाधार श्रीराम हैं।**

राम जो कण–कण में रमा है, विद्यमान है। प्रत्येक भारतीय की आस्था में समाया यह नाम, सिर्फ नाम नहीं है, अपितु यह प्रतीक है आदर्शों का, मर्यादा का, संस्कारों का। निर्गुण भक्ति धारा को मानने वाले उपासक या सगुण भक्ति धारा को मानने वाले भक्त कवि दोनों प्रकार के भक्त कवियों ने राम के नाम को महत्व दिया है। राम का नाम निर्गुण ब्रह्म के रूप में समझा जाए या दशरथ पुत्र राम के, दोनों ही नाम का अर्थ एक ही है। राम का नाम नवीन स्थितियों में नए अर्थ का वहन करता है। आज भी राम उतने ही प्रासंगिक हैं जितने वर्षो पहले थे। मर्यादा पुरुषोत्तम राम, यह नाम किसी एक धर्म का पर्याय नहीं है, यह पर्याय है भारत का। देश के जनजीवन और दिनचर्या से यदि राम शब्द को हटा दिया जाए, तो यह भारत नहीं रह जाएगा। जिस प्रकार हिमालय व गंगा के बिना भारत का अस्तित्व नहीं है उसी प्रकार भारत के अस्तित्व के प्राणाधार श्रीराम हैं।रामायण व रामचरितमानस – ये उपजीव्य ग्रंथ रामकथा के आधार हैं। इन ग्रंथों को आधार मानकर भारतवर्ष के विभिन्न कवियों ने अपनी–अपनी भाषा में रामकथा कही है। वर्षों से अनेक कावियों द्वारा रामकथाएं कही जा रहीं हैं। प्रत्येक रामकथा में मधुरता, सरसता, होती है जो पाठकों को आनंद प्रदान कराती है। अधिकांशतः लोगों का मत है कि श्री राम की महत्ता तो सिर्फ उत्तर भारत में है, परंतु ये विचार ही ग़लत है। देश में ऐसी कोई भाषा नहीं है जिस भाषा में रामायण न लिखी गयी हो। ये नाम किसी एक धर्म का पर्याय नहीं है, ये पर्याय है सम्पूर्ण भारतवर्ष का जो देश को पूर्णता प्रदान करता है।

आज संपूर्ण भारतवर्ष राममय हो रहा है और हो भी क्यों ना, क्योंकि अयोध्या में निर्मित भव्य और दिव्य राम मंदिर रामलला की प्राण प्रतिष्ठा जो है। प्राचीन महाकाव्य रामायण के अनुसार अयोध्या राम की जन्म भूमि है। जिसे अवधपुरी नाम से भी जाना जाता है– अर्थात् जहां किसी का वध ना होता हो।

अथर्ववेद में अयोध्या को ईश्वर का नगर बताया गया है। अयोध्या का अर्थ है– जिसे युद्ध से जीत ना सके। स्कंदपुराण के अनुसार अयोध्या शब्द 'अ' कार ब्रह्मा 'य' कार विष्णु, तथा 'ध' रुद्र का स्वरूप है। अयोध्या की तुलना स्वर्ग से भी की गई है तथा भारत की प्राचीन

ISSN No. 2581-3528

सप्तपुरियों में अयोध्या की गणना प्रथम स्थान पर की जाती है।

इसी पवित्र नगरी अयोध्या में एक नया अध्याय लिखा जा रहा है। यह अध्याय भारत के इतिहास में सदैव अविस्मरणीय रहेगा। श्री राम जन्मभूमि में 70 एकड़ भूमि पर बन रहे भव्य राम मंदिर में रामलला की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा, 22 जनवरी का दिन बहुत ही ऐतिहासिक है। जिस दिन का इंतजार करोड़ों भारतवासियों को हमेशा से था, वो सपना पूर्ण हो गया है।

परंतु इस जन्मभूमि पर मंदिर बनाने के लिए बहुत संघर्षों का सामना करना पड़ा है। सन् 1528 से लेकर 2023 तक श्री राम जन्मभूमि के पूरे 495 वर्षों के इतिहास में कई मोड़ आए। इसमें 9 नवंबर 2019 का दिन बेहद खास रहा, जब पांच जजों की संवैधानिक बेंच ने ऐतिहासिक फैसला सुनाया। देश की शीर्ष अदालत ने विवादित भूमि पर राम मंदिर के निर्माण का रास्ता साफ करते हुए इसे एक ट्रस्ट को सौंपने का आदेश सुनाया था। इस निर्णय के पश्चात राम मंदिर निर्माण का कार्य प्रारंभ हुआ। रामलला की प्राण प्रतिष्ठा से धर्म के प्रति एक अटूट विश्वास भारतवासियों के हृदय में परिलक्षित होता है।

भारत जैसे आध्यात्मिक व धार्मिक देश में मंदिरों का निर्माण सदियों से होता आ रहा है। पूरे देश में मंदिरों की कमी नहीं है न ही किसी मंदिर का निर्माण पहली बार हो रहा है। पांच सौ वर्षों से अयोध्या का संघर्ष सिर्फ राम मंदिर तक सीमित नहीं है। आजादी से पहले कई सदियों तक आक्रमणकारियों ने भारत के धर्म, संस्कृति और अध्यात्म पर हमले कर हमारे प्रतीकों को नष्ट करने में कोई कसार नही छोड़ी थी। आक्रांताओं ने प्राचीन मंदिरों को तोड़ा और पूरी सभ्यता को समाप्त करने की पुरजोर कोशिश की। सन् 1528 में अयोध्या में मंदिर तोड़कर बावरी मस्जिद बनी और यहां से राम मंदिर बनने का संघर्ष आरंभ हुआ। अयोध्या का मतलब सिर्फ इतना नहीं की ये श्री राम की जन्म भूमि है, वास्तव में यह अयोध्या भारत को हजारों वर्षों से धार्मिक और आस्थाओं को जोड़े हुए है।

**अयोध्या का मतलब सिर्फ इतना नहीं की ये श्री राम की जन्म भूमि है, वास्तव में यह अयोध्या भारत को हजारों वर्षों से धार्मिक और आस्थाओं को जोड़े हुए है। जैन धर्म के पांच तीर्थंकरों की जन्म भूमि अयोध्या रही है। स्वयं भगवान महावीर ने अयोध्या के राजा को जैन धर्म की दीक्षा दी थी यही नहीं भगवान बुद्ध भी स्वयं को सूर्यवंशी ही मानते थे।**

जैन धर्म के पांच तीर्थंकरों की जन्म भूमि अयोध्या रही है। स्वयं भगवान महावीर ने अयोध्या के राजा को जैन धर्म की दीक्षा दी थी यही नहीं भगवान बुद्ध भी स्वयं को सूर्यवंशी ही मानते थे। सातवीं शताब्दी में चीन का यात्री ह्वेन त्सांग भी अयोध्या आया था उसने अयोध्या को हिन्दू, जैन और बौद्ध धर्म का केंद्र बताया था।

गुरुनानक देव जी भी सन् 1510 में अयोध्या आये और राम जन्मभूमि के दर्शन किये। इसके पश्चात गुरु तेग बहादुर जी और गुरु गोविंद सिंह जी भी अयोध्या आये थे। गुरु गोविंद सिंह जी के बाद निहंग सेना भी राम जन्मभूमि के लिए संघर्ष करने अयोध्या आयी थी। अयोध्या एक ऐसा स्थान है जहां देशभर के विभिन्न मत, पंथ और संप्रदाय जुड़े हुए हैं। ऐसी ही धार्मिक और आध्यात्मिक अयोध्या का प्राचीन गौरव राममंदिर के निर्माण से पुनः प्राप्त हो रहा है।

राम मंदिर एकता, बंधुत्व, समरसता, आध्यात्मिकता एवं सांस्कृतिकता का प्रतीक है जो 'सर्वधर्म समभाव' का संदेश देता है। देश को एक सूत्र में पिरोते इस मंदिर को 'राष्ट्र मंदिर' के नाम से भी अभिभूत किया जाना चाहिए। भारत के नवनिर्मित राष्ट्र मंदिर के द्वारा भारत की शक्ति बढ़ेगी और सनातन धर्म का भी प्रचार व प्रसार होगा। समन्वय की विराट चेतना का प्रतीक राम मंदिर न सिर्फ देश का गौरव बढ़ाएगा वरन् विश्व में भारत के पुनः विश्वगुरु होने की संकल्पना को भी साकार करेगा।

ISSN No. 2581-3528

# वनवासी राम : समरस चेतना के आदिपुरुष

डॉ. रामशंकर
सहायक प्राध्यापक,जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग
आईआईएमटी कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट, गौतम बुद्ध नगर

**प्रभु राम के जीवन में जो बात सर्वाधिक महत्वपूर्ण रही है वह है उनका अपने अनुज भरत के लिए राज्य का त्याग कर वनवास जाना। वनवासी राम के रूप में एक समरस समाज की स्थापना करना। राम समरसता के सबसे बड़े प्रतीक हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम राम का जीवन मर्यादा, सामंजस्य और समरसता का ही पर्याय है। इसीलिए वे न केवल भारतीय समाज के लिए बल्कि विश्व समुदाय के लिए आदर्श के रूप में देखे जाते हैं।**

वनवासी राम का सारा जीवन दर्शन सामाजिक समरसता का अनुकरणीय मार्ग रहा है। वल्कल पहने राम ने वनगमन के समय हर पथ पर समाज के उस अंतिम व्यक्ति को गले से लगाया जिसे आज के समय में उपेक्षित और कमजोर कहा जाता है। केवट को भगवान राम ने गले लगाकर समाज को यह संदेश दिया कि सभी लोग एक हैं। आत्मा और परमात्मा एक हैं। उनमें जाति और ऊंच–नीच का कोई भेद नहीं है। वर्तमान में वंचित समुदाय में शामिल केवट को भगवान राम ने गले लगाकर सामाजिक समरसता का प्रतिमान स्थापित किया है।

भगवान राम अयोध्या के युवराज हैं। भगवान राम को वनवासियों के बीच में रहने के कारण ही वनवासी राम के रूप में उनको ख्याति प्राप्त हुई। राम का पूरा जीवन सामाजिक समरसता, समानता तथा बंधुत्व के सर्वोत्तम उदाहरण के रूप में देखा जाता है। वनगमन में चाहे निषाद राज से मित्रता का प्रसंग हो या शबरी के झूठे बेर खाना या अहिल्या का उद्धार या जटायु को गले लगाकर सम्मान देने की कथा हमें निरंतर समरसता के भाव को ही स्थापित करती है। बहुत सी वनवासी प्रजातियों को उन्होंने गले लगाया, उनको बराबर का दर्जा दिया।

**शोध उद्देश्य :** प्रस्तुत शोध का उद्देश्य वनवासी राम के समरसता युक्त प्रसंगों का विवेचन करना है।

**शोध विधि :**शोध की प्रविधि गुणात्मक प्रविधि है। इस शोध पत्र में रामचरितमानस की विषयवस्तु का गुणात्मक विश्लेषण किया गया है।

**विवेचन :** वर्तमान में भी हम देखते हैं तो स्पष्ट दिखाई देता है कि वनवासी आर्थिक रूप में अभावग्रस्त हो सकता है, लेकिन सांस्कृतिक समृद्ध तथा समन्वयवादी जीवन मूल्यों से संपन्न रहता है। वनवासी समाज के बीच आत्मीय संपर्क, परस्पर संबंध स्थापित रहता है। उसके यह आत्मीय संबंध विश्व कल्याण के मार्ग को प्रशस्त करता है।

राम सामाजिक समरसता के प्रतिमान हैं। अपने जीवन के सबसे संघर्ष के क्षणों में राम ने सहयोगी और सलाहकार वनवासियों को ही बनाया, इनमें केवट, कोल, भील, किरात, वानर और रीछ आदि सम्मलित रहे। इन सभी को वनवासी राम ने सखा माना। उन्होंने तो वनवासी हनुमान को लखन से अधिक प्रिय बताया। रामचरितमानस की चौपाई 'सुनु कपि जियं मानसि जनि ऊना।
तैं मम प्रिय लछिमन ते दूना।'

बालि संहार के बाद राम ने सुग्रीव को किष्किन्धा का राजा बनाया तो बालि पुत्र अंगद को इसका उत्तराधिकारी

ISSN No. 2581-3528

घोषित किया। जब लंका में राम ने विजयी होकर लक्ष्मण से कहकर विभिषण का राजतिलक करवाया यानि गलत आचरण करने वाले को दंड प्रदान करते हैं, लेकिन दूसरे के धन–संपति आदि से विरक्ति का भाव ही रखते हैं। राम शक्तिशाली और धर्मानुरागी होने के कारण समाज के अपराधी को तो दंडित करते हैं, किंतु पराजितों के धन–संपदा राज्य आदि से मोह नहीं रखते।

वनवासी राम का दुश्मन के प्रति कैसा दृष्टिकोण था इसको रावण की मृत्यु के प्रसंग से समझा जा सकता है कि जब विभीषण अपने भाई रावण के किये पर लज्जित होकर उसके शव का अंतिम संस्कार करने में हिचकते हैं, तब राम समझाते हैं कि 'मरणान्तानि वैराणि निर्वृत्तं नरू प्रयोजनम्। क्रियतामस्य संस्कारो ममाप्येष यथा तव।' अर्थात् बैर जीवन कालतक ही रहता है। मरने के बाद उस बैर का अंत हो जाता है। इस प्रसंग से बंधुत्व को भी समझने की जरूरत है।

तुलसीकृत रामचरितमानस में राम के चरित्र को पढ़ते हैं तो समरस समाज के बिंदु दिखाई पड़ते हैं। सीता का जब अपहरण होता है, राम–लक्ष्मण सीता की खोज में जाते हैं तो रावण से युद्ध में परेशान गिद्धराज जटायु दिखाई पड़ते हैं। राम पक्षीराज को गोद में उठाते हैं और उनको पिता का दर्जा देकर उनका अंतिम संस्कार करते हैं। उन्हें अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष में जीवन गंवाने का पूरा सम्मान दिया। पक्षीराज जटायु वनवासी जनजातियों में से एक थे। वल्कल पहने राम ने वन में पिछड़े एवं गरीबों के साथ को स्वीकार किया। वनवासी राम ने मानवता से ओतप्रोत एक ऐसे समाज की रचना की जो अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए भी तैयार रहे। राम ने अनुसूचित जातियों व जनजातियों को आत्मसात किया और उनके लोकप्रिय

**राम समाज के दुखी, गरीब तथा अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति को भी इस तरह प्यार करते हैं जैसे अन्य को करते हैं। राम न्याय प्रिय हैं। वे समरसता युक्त समाज की स्थापना करने में सफल हो पाते हैं। उन्होंने समाज को सामाजिक समरसता संदेश दिया है।**

बने। उन्हें संगठित कर बुराइयों से निकालकर उनमें राष्ट्रधर्म और समरसता का स्वभाव पैदा किया।

राम अपने राज्य को निष्कंटक व आदर्श बनाने हेतु सांस्कृतिक समाज तैयार करने के साथ–साथ आसुरी प्रवृत्ति से मुक्त राम ने सेतु निर्माण के लिए एक उत्कृष्ट प्रतिमान स्थापित किया। सेतु निर्माण में प्रत्येक जन को एक प्रबल संदेश दिया कि कोई कितना भी छोटा, असहाय, पिछड़ा या गरीब क्यों ना हो, पर प्रत्येक स्तर पर हमें श्रम की महत्ता को अग्रेषित करना होगा। श्रम की पूजा ही नहीं बल्कि उसके प्रति निष्ठा, आस्था एवं सम्मान की भावना भी होनी चाहिए। राम सेतु के निर्माण के समय सबसे छोटे जीव के रूप में जुटी गिलहरी के भी योगदान को सराहते हैं। राम समाज के दुखी, गरीब तथा अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति को भी उसी तरह प्यार करते हैं जैसे अन्य को। राम न्याय प्रिय हैं। वे समरसता युक्त समाज की स्थापना करने में सफल हो पाते हैं। उन्होंने समाज को सामाजिक समरसता संदेश दिया है। राम शांति हेतु रावण के पास दूत भेजते हैं।

वनवासी राम का सम्पूर्ण जीवन सामाजिक समरसता का प्रतीक है, यहां उन्होंने सदैव समाज के सबसे अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति को गले लगाया। राम ने दंडकारण्य की धरती से पूरी दुनिया तक "सम्पूर्ण समाज एक परिवार है" का संदेश दिया। वनगमन के बाद एक वनवासी के रूप में राम का जीवन मानो सामंजस्यता और समरसता का ही पर्याय बनकर हमारे लिए अनुकरणीय हो गया है। शबरी भील समुदाय की हैं, लेकिन वनवासी राम शबरी के झूठे बेर मां कहकर स्वीकार करते हैं और बड़े ही प्रेम से खाते हैं। शबरी वनवासी राम को प्रभु के रूप में मानती हैं और छोटी जाति होने से संकोच करती हैं, लेकिन वनवासी राम उनको भेद भाव से परे होने की बात कहते हैं। तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में लिखा कि राम जी कहते हैं कि–

**'कह रघुपति सुनु भामिनि बाता।**
**मानउँ एक भगति कर नाता॥**
**जाति पाँति कुल धर्म बड़ाई।**
**धन, बल, परिजन, गुन, चतुराई॥**

ISSN No. 2581-3528

अर्थात हे भामिनि! मेरी बात सुनो! मैं तो केवल एक भक्ति ही का संबंध मानता हूँ। सामाजिक समरसता का मूलमंत्र समानता है, जो समाज में व्याप्त सभी प्रकार के भेदभावों एवं असमानताओं को जड़–मूल से नष्ट कर नागरिकों में परस्पर प्रेम एवं सौहार्द में वृद्धि तथा सभी वर्गों में एकता का संचार करती है।

समस्त अखिल ब्रह्मांड में वनवासी राम में लौकिक एवं अलौकिक तमाम गुणों का समावेश मिलता है। वनवासी राम एक साधारण मनुष्य के रूप में समस्त सामाजिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक मर्यादा को उच्च प्रतिमान पर स्थापित करने का प्रयास करते हैं। आदिपुरुष के रूप में स्थापित राम विपरीत परिस्थितियों में जीवन जीने की कला को सिखाते हैं। राम का जीवन सब कुछ हार चुके लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनके जीवन में ऐसी परिस्थितियां कई बार सामने आईं जिनमें सामान्य व्यक्ति या तो हताशा या निराशा की भंवर में जा सकता था। क्रोध व ईर्ष्या के वशीभूत होकर पारिवारिक तथा सामाजिक सदाचार की मर्यादा को भूल सकता था लेकिन राम ने विपरीत परिस्थितियों में उच्च मर्यादा को कैसे स्थापित रखा जा सकता है, ऐसा अप्रतिम उदाहरण प्रस्तुत किया है। भगवान राम को राज्याभिषेक के समय कैकेयी द्वारा 14 वर्ष का वनवास का आदेश देना और राम द्वारा स्वीकार करना यह माता की प्रतिष्ठा का भाव दिखाता है। उनके मन में किंचित मात्र भी द्वेष घृणा या प्रतिकार की भावना उत्पन्न नहीं हुई। वह माता कौशल्या की तरह ही उनके प्रति स्नेह आदर और ममता का भाव रखते हैं। लक्ष्मण द्वारा कैकेयी की निंदा करने पर वह तुरंत लक्ष्मण को रोकते हैं। साथ ही भरत अथवा शत्रुघ्न के प्रति उनके मन में उठ रहे संशयों को दूर करते हैं। राज्याभिषेक के बाद हनुमान जी को विदा करते हुए उनके विचार 'हे कपिश्रेष्ठ, मुझ पर

**भारत ही नहीं वरन पूरे विश्व में सांस्कृतिक समरसता के आदिपुरुष के रूप में भगवान राम को देखा जाता है। किसी राष्ट्र या समाज की पहचान केवल एक वर्ग से नहीं होती, बल्कि राज्य या राष्ट्र के नैतिक आचरण से होती है। भगवान राम का जीवन इन्हीं सांस्कृतिक समरस तत्व को आत्मसात कर उत्कृष्ट रेखांकन करता है।**

तुम्हारे ऐसे उपकार हैं कि उनमें एक–एक के बदले अपने प्राण तक दे सकता हूं, फिर भी शेष उपकारों के लिए मुझे तुम्हारा ऋणी बनकर ही रहना होगा। 'सामाजिक समन्वय को स्थापित करते हुए राम ने मित्र एवं राजधर्म का निर्वाहन जिस परिपक्वता से किया उसके कारण ही रामराज्य आज की एक आदर्श राज्य संकल्पना है। उनका अखिल ब्रह्मांड स्वरूप सदभाव सदविचार तथा सदभावना और परमार्थ ही परम लक्ष्य होने के कारण प्रजा में परस्पर प्रेम व स्नेह था, छोटे–बड़े ऊंच–नीच के कारण भेदभाव नहीं था।

**निष्कर्ष :** वनवासी राम ने अपने वनवास काल में समाज को एक सूत्र में पिरोकर अखंड समाज की रचना की है। सामाजिक शक्ति से युक्त राम ने आसुरी प्रवृत्ति के तमाम ऐसे लोगों पर विजय प्राप्त की जो समाज को नकारात्मकता प्रदान कर रहे थे। समाज को निर्भरता के साथ जीने तथा समाज का मार्ग प्रशस्त करने के लिए उन्होंने सामाजिक बुराइयों पर विजय प्राप्त की। उन्होंने कमजोर वर्गों को गले से लगाकर सामाजिक भेदभाव को पूरी तरह खत्म किया। वह निषाद राज गुह को गले से लगाते हैं और उन्हें मित्र का भाव देते हैं। आज समाज में जिस प्रकार छुआछूत तथा वैमनस्य का भाव व्याप्त है वहां राम के जीवन से हमें सीखने को मिलता है। पूरे भारत ही नहीं वरन् पूरे विश्व में सांस्कृतिक समरसता के आदिपुरुष के रूप में भगवान राम को देखा जाता है। किसी राष्ट्र या समाज की पहचान केवल एक वर्ग से नहीं होती, बल्कि उस राज्य या राष्ट्र के नैतिक आचरण से होती है। भगवान राम का जीवन इन्हीं सांस्कृतिक समरस तत्व को आत्मसात कर उत्कृष्ट रेखांकन करता है।

**संदर्भ ग्रंथ सूची**


Prasad, R.C. (1990). Tulsidasa's Shriramcharitmanasa, The holy lake of the acts of Rama. New Delhi: Motilal Banarasidas Publishers Pvt. Ltd.

Rajagopalachari C.(2001). Ramayana. New Delhi: Bhartiya Vidya Bhavan.

https://communicationtoday.net/2015/06/29/whole-humanity-media-and-mood/

श्रीरामचरितमानस, तुलसीदास, गीता प्रेस, सटीक मझला साइज, सं 2068

तुलसीदास, चंद्रबली पांडेय, नागरी प्रचारणी सभा, काशी

तुलसी, सं. उदयभानु सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली,1996

लोकवादी तुलसीदास, विश्वनाथ त्रिपाठी, राधाकृष्ण, 2007

तुलसी रू आधुनिक वातायन से, रमेश कुंतल मेघ, भारतीय ज्ञानपीठ, 1973

उत्तररामचरितम, भवभूति, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, 1963

https://www.samvad.in/Encyc/2021/4/21/shriramnavmi.html

https://www.amarujala.com/ram-mandir/ayodhya-ram-mandir-inauguration-ramlala-lord-ram-is-the-most-living-symbol-of-social-harmony-2024-01-05

प्रभु श्रीराम की नगरी अयोध्या को जिस दिव्यता, भव्यता और नव्यता की ओर वर्तमान सरकार लेकर जा रही है उसकी झलक दिखने लगी है। ना केवल नगर में हो रहे विकास कार्यों में बल्कि भगवान राम के भव्य मंदिर और यहां तक कि उनकी मूर्ति में भी अलौकिकता के दर्शन होंगे। श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट की ओर से भी इस पर अपनी मुहर लगा दी गई है।

ट्रस्ट की ओर से बताया गया है कि तीन शिल्पकारों ने प्रभु श्रीराम की मूर्ति का निर्माण अलग-अलग किया। जिसमें से एक मूर्ति को प्रभु प्रेरणा से चुना गया है। चुनी गई मूर्ति की पैर से लेकर ललाट तक की लंबाई 51 इंच है और इसका वजन डेढ़ टन है। मूर्ति की सौम्यता का बखान करते हुए कहा गया कि श्यामल रंग के पत्थर से निर्मित मूर्ति में ना केवल भगवान विष्णु की दिव्यता और एक राजपुत्र की कांति है, बल्कि उसमें 5 साल के बच्चे की मासूमियत भी है। चेहरे की कोमलता, आंखों की दृष्टि, मुस्कान, शरीर आदि को ध्यान में रखते हुए मूर्ति का चयन किया गया है। 51 इंच ऊंची मूर्ति के ऊपर मस्तक, मुकुट और आभामंडल को भी बारीकी से तैयार किया गया है।

मूर्ति की प्रतिष्ठा पूजा विधि को 16 जनवरी से प्रारंभ कर दिया जाएगा। इसके बाद गर्भगृह में प्रभु श्रीराम को आसन पर स्थापित कर दिया जाएगा। प्रभु श्रीराम की मूर्ति की एक विशेषता यह भी है कि इसे अगर जल और दूध से स्नान कराया जाएगा तो इसका नकारात्मक प्रभाव पत्थर पर नहीं पड़ेगा।

अयोध्या में राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा का कार्यक्रम तो 22 जनवरी को होगा, लेकिन उत्सव 8 जनवरी से ही शुरू हो जाएगा। यह रामोत्सव 76 दिनों तक चलेगा। इस दौरान अयोध्या के रामकथा पार्क में काकभुशुण्डि मंच पर 11 जाने-माने कथा वाचक रामकथा कहेंगे। यह जानकारी शनिवार को प्रमुख सचिव पर्यटन एवं संस्कृति मुकेश कुमार ने दी। इस दौरान अयोध्या में देश-विदेश के 35000 कलाकारों का सांस्कृतिक समागम होगा। रोजाना 500 कलाकार अपनी प्रस्तुतियों से माहौल को राममय करेंगे। यह सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रमुख 35 स्थानों पर होंगे। उन्होंने बताया कि अयोध्या में रामकथा और प्रवचन के लिए लोकप्रिय कथावाचकों को आमंत्रित किया गया है। इनमें चिन्मयानंद बापू जी महाराज, देवकीनंदन ठाकुर जी महाराज, ऋषिराज त्रिपाठी जी महाराज, साध्वी ऋतंभरा, महंत राम दिनेशाचार्य जी महाराज, पं. ऋषिराज त्रिपाठी जी महाराज, उज्ज्वल शांडिल्य जी महाराज, कृष्ण प्रताप तिवारी जी महाराज, राम हृदय दास जी महाराज, संजीव कृष्ण ठाकुर जी महाराज, चतुरनारायण जी महाराज का एक-एक हफ्ते का शेड्यूल तय किया गया है। ये कथाएं 24 मार्च तक चलेंगी। कुल 25 पौराणिक स्थलों और मंचों पर सांस्कृतिक काय्रक्रमों का आयोजन होगा। इस दौरान विदेश और दूसरे राज्यों की रामलीलाओं का भी मंचन किया जाएग।

देश के कई राज्यों ने 22 जनवरी 2024 को अवकाश घोषित किया है साथ ही विश्व के कई देशों ने भी अपने कर्मचारियों को अवकाश दिया है ताकि विदेशों में रहने वाले भारतीय अपने आराध्य प्रभु श्री राम के चरणों में अपना नमन कर सकें एवं इस ऐतिहासिक क्षण का हिस्सा बन सकें।

-संकलन : श्रेयांशी